Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوا الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا دِيْنَكُمْ هُزُوًا وَّلَعِبًا مِّنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَالْكُفَّارَ اَوْلِيَآءَ وَاتَّقُوا اللّٰهَ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ

(सूरत अन्निसा आयत : 174)

अनुवाद :हे वे लोगो जो ईमान लाए हो। उन लोगों में से जिन्हें तुम से पहले किताब दी गई उनको जिन्होंने तुम्हारे दीन को हंसी ठट्ठाऔर खेल तमाशा बना रखा है और कुफ़्फ़ार को अपना दोस्त न बनाओ और अल्लाह से डरो यदि तुम मोमिन हो।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ وَعَلٰى عَبْدِهِ الْمَسِيْحِ الْمَوْعُوْدِ

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ

वर्ष- 6

अंक- 43

मूल्य 575 रुपए वार्षिक

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly BADAR Qadian HINDI

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

21 रबीय्युल अव्वल 1442 हिज्री कमरी 28 इख़ा 1400 हिज्री शम्सी 28 अक्तूबर 2021 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़ज़ल नाज़िल करता रहे। आमीन

आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नसीहतें

गरीब की प्रशंसा

(1476) हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया गरीब वह नहीं जो एक दो लुक़्मे के लिए (इधर उधर) मांगता फिरे बल्कि गरीब वह है जो ज़रूरतमंद हो और शरमाए और लोगों के पीछे पड़ कर न मांगे।

पैसे की बर्बादी और अत्याधिकत प्रश्न पूछना तआला को पसंद नहीं

(1477) हज़रत मआविया रज़ियल्लाहु अन्हो ने हज़रत मुगीरा बिन शोबा रज़ियल्लाहु अन्हु को लिखा कि मुझे कोई ऐसी हदीस लिख कर भेजें जो आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से सुनी हो। इसलिए] उन्होंने मआविया को लिखा : मैं ने नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से सुना,आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम फ़रमाते थे :अल्लाह तआला ने तुम्हारे लिए तीन बातें नापसंद फ़रमाई हैं। व्यर्थ की बात करना और माल को नष्ट करना और अत्याधिकत प्रश्न करना।

(बुख़ारी, भाग 3, किताब अल्- ज़कात, प्रकाशन 2008 क़ादियान)

वास्तव में इन्सान जब तक झूठ को त्याग नहीं देता वह पवित्र नहीं हो सकता। सांसारिक लोग कहते हैं कि दुनिया के बिना गुज़ारा नहीं होता यह एक व्यर्थ बात है।

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

ग़रज़ अंबिया अलैहिमुस्सलाम इन चीज़ों के ग़ुलाम नहीं होते,बल्कि ये चीज़ें उनके लिए ख़ादिम के रूप में होती हैं और उनके उच्च स्तर के सम्पूर्ण आचरण का नमूना उनके इस ज़िक्र और ज़ौक़ में जो ख़ुदा तआला के तसव्वुर और महवियत में उन्हें मिलता है उनसे कुछ हर्ज पैदा नहीं होता। वे कुछ ऐसे लीन और फ़ना होते हैं कि दुनिया से बिलकुल अलग होते हैं। जब इस किस्म की रबूदगी होती है तो फिर ख़ुदा तआला की तरफ़ से आवाज़ें आने लगती हैं और वार्तालाप होते हैं। यह नियम की बात है कि जो जज़्ब की शक्ति लेकर निकलती है वह दूसरे को जज़्ब करती है। इस जज़्ब में इतनी शक्ति होती है कि संसार और संसार की सारी बातें इस में भस्म हो जाती हैं और वह ख़ुदा तआला के फ़ज़ल और फ़ैज़ को अपनी तरफ़ खींचने लगती है और इसी सिलसिला को बाक़ी समस्त सिलसिलों पर तक़द्दुम और प्राथमिकता हो जाती है। परन्तु इसके लिए सहीह कोशिश की ज़रूरत है। इसके बिना यह राह नहीं खुलती। जैसा कि फ़रमाया है وَالَّذِيْنَ جَاهَدُوْا فِيْنَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا (अल-अनकबूत:70)और इसी की तरफ़ इशारा है اِيَّاكَ نَعْبُدُ यद्यपि اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ को اِيَّاكَ نَعْبُدُ पर प्राथमिकता है, परन्तु फिर भी यदि ध्यान दिया जाए तो मालूम होता है कि ख़ुदा तआला की रहमानियत ने सबक़त की हुई है। اِيَّاكَ نَعْبُدُ भी किसी क़ुव्वत ने कहलवाया है और वह क़ुव्वत जो पोशीदा ही पोशीदा اِيَّاكَ نَعْبُدُ का इक़रार कराती है, कहाँ से आई?क्या ख़ुदा तआला ने ही वह प्रदान नहीं की है? बे-शक वह ख़ुदा तआला का ही उपकार है जो उसने केवल रहमानियत से प्रदान फ़रमाया है। इस की तहरीक और तौफ़ीक़ से यह اِيَّاكَ نَعْبُدُ भी कहता है। इस पहलू से यदि ग़ौर करें तो इस को दूसरे स्थन पर करना है और दूसरे पहलू से उस को प्राथमिकता है। अर्थात जब यह क़ुव्वत उसको इस बात की तरफ़ लाती है तो यह देरी हो गई और पहली अवस्था में प्राथमिकता। इसी तरह पर नबुव्वत की सिलसिला का सार या अभिप्राय है।

नबुव्वत की अनिवार्य चीज़ें

यह तो संभव है कि हज़ारों हज़ार इन्सान मुलहम(इल्हाम पाने वाला) होने का दावा करें और नबुव्वत की वास्तविकता और इलाही कलाम की हुज्जत स्थापित करने के लिए यह ज़रूरी बात है परन्तु नबुव्वत के मामले में लक्ष्य मूल लक्ष्य एक और बात होती है जो विशेष रूप से नबियों से सम्बन्धित होती है और यह नियम की बात है कि जब कोई चीज़ आती है तो उसकी अनिवार्य बातें उसके साथ होती हैं। यह नहीं कि वे अनिवार्य बातों से अलग हो। जैसे जब खाना आएगा , तो उसकी अनिवार्य बातें साथ ही होंगे। प्रत्येक किस्म के बर्तन,पानी यहां तक कि ख़िलाल भी दे देंगे। इसी तरह पर नबुव्वत की अनिवार्य बातें उसके शेष पृष्ठ 12 पर

जन्नत आलसी लोगों का ठिकाना नहीं बल्कि इस में रहने वाले भी काम करेंगे, यदि काम न करना होता तो थकान के इंकार करने की की क्या ज़रूरत थी। जन्नत का पूर्ण आनंद इस में है कि भावनाओ की दुविधा से आज़ाद हो कर इन्सान अपनी इबादात में आनंद ही आनंद महसूस करेगा

सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो सूरत हिज्र आयत : 49 لَا يَمَسُّهُمْ فِيْهَا نَصَبٌ وَّمَا هُمْ مِّنْهَا بِمُخْرَجِيْنَ की तफ़सीर मेंफ़रमाते हैं :

फ़रमाया उनको जन्नत में न किसी किस्म की थकान पहुँचेगी और न वे इस से निकाले जाएंगे। इस में बताया गया है कि जन्नत में भी इन्सान काम करेंगे लेकिन अंतर यह होगा कि वहां फ़ना नहीं होंगे क्योंकि थकान फ़ना का संकेत होता है। थकान के अर्थ ही ये होते हैं कि इन्सान के जिस्म से कुछ कण चर्बी या और किसी लाभदायक भाग के निकल गए हैं और थकान काम छोड़ने और आराम करने के लिए तबीयत चाहती है या आहार खाने के लिए। मैंने एक चिकित्सा की किताब में पढ़ा है कि हाथ की एक हरकत में इन्सानी जिस्म के कई मिलियन सेल नष्ट हो जाते हैं। अत: कुछ समय काम करने के बाद जब थकान महसूस होती है वह इस बात का संकेत होता है कि जिस्म से काफ़ी ताक़त नष्ट हो चुकी है अब इस नुक़्सान का निवारण करो। अत: थकान फ़ना का संकेत है और यह कह कर कि वहां थकान नहीं होगी यह बताया है कि वहां विलय शरीर का नहीं होगी। इस से यह भी मालूम हुआ कि आहार जो विलय में परिवर्तित होती है वहां उस का काम यह नहीं होगा कि फ़ना शूदा को फिर क़ायम करे बल्कि मज़ीद ताक़त देना काम होगा जैसे कि इस ज़िंदगी में क़दम पीछे किसी तरह नहीं हटेगा केवल आगे ही बढ़ना होगा।

चूँकि इस अस्थाई फ़ना के नतीजा में जो थकान की सूरत में ज़ाहिर होती रहती इन्सान को मौत आती है क्योंकि आहिस्ता-आहिस्ता जिस्म की ताकतें नष्ट हो जाती हैं और जन्नत में इस किस्म के नुक़्सान की नफ़ी फ़रमाई है इस लिए फ़रमाया कि वे वहां से निकाले नहीं जाएंगे अर्थात अब उन के लिए कोई मौत नहीं।

याद रहे कि जन्नत एक रुहानी स्थान है और जबकि उपमा की भाषा में उसके परमानंद को दुनिया के परमानंद से समानता दी गई है शेष पृष्ठ 1 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

प्रश्न उत्तर

सय्यदना हज़रत अमीरुल मौमिनीनन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह अय्यदहुल्लाहु तआला

बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ से पूछे जाने वाले महत्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तर (प्रथम भाग)

जब अहमदियत का ग़लबा होगा तो उस वक़्त भी पूरी दुनिया में एक हुकूमत नहीं होगी

अलग अलग हुकूमतें होंगी, उनके मुल्की कानून इस्लामी कानून से नहीं टकराएँगे

ख़िलाफ़त इस्लामीया सारी दुनिया में एक ही होगी और समस्त हुकूमतें इलमी और रुहानी तौर पर ख़लीफ़-ए-वक़्त से मार्गदर्शन हासिल करेंगी

उनके सयासी विषय में ख़लीफ़-ए-वक़्त का कोई दख़ल नहीं होगा और कोई ख़लीफ़ा ख़ुद फ़ौज लेकर किसी हुकूमत पर हमला-आवर नहीं होगा

नोट : सय्यदना हज़रत अमीरुल मौमिनीनन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ विभिन्न वक़्तों में अपने लेखों और एम.टी.ए के विभिन्न प्रोग्रामों में महत्वपूर्ण विषयों के बारे में जो आदेश फ़रमाते हैं, उनमें से कुछ पाठकों के लाभ के लिए अलफ़ज़ल इंटरनैशनल के धन्यवाद के साथ प्रकाशित किए जा रहे हैं।(सम्पादक)

सय्यदना हज़रत अमीर मौमेनीन ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ से पूछे जाने वाले महत्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तर (क़िस्त:6)

प्रश्न मज्लिस खुद्दामुल अहमदिया अमरीका की तरफ़ से तैयार करदा तर्बीयती उमूर के सम्बन्ध में प्रश्न उत्तर पर आधारित मुसव्वदे में एक प्रश्न कि अहमदियत के ग़लबा की सूरत में दुनिया की सयासी फ़िज़ा कैसी होगी? के बारे में मार्गदर्शन फ़रमाते हुए हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल ने अपने पत्र तिथि 26 मई 2018 ई. में फ़रमाया :

उत्तर सूरत अल् हिज्रात में अल्लाह तआला ने मोमिनीन की दो हुकूमतों के आपस में लड़ने और बाक़ीयों को उनके मध्य सुलह करवाने का जो हुक्म दिया है इस में वास्तव यह भविष्यवाणी भी है कि जब सारी दुनिया पर इस्लाम का ग़लबा हो जाएगा तो उस वक़्त भी सारी दुनिया में एक हुकूमत नहीं होगी बल्कि अलगअलग हुकूमतें होंगी।

अत: अल्लाह तआला के फ़ज़ल से जब अहमदियत का ग़लबा होगा तो दुनिया में सयासी लिहाज़ से जबकि अलग अलग हुकूमतें होंगी जिनके मुल्की कानून इस्लामी कानून से नहीं टकराएँगे। लेकिन इस ज़माना में सियासत और रूहानियत के विषय अलग अलग तै होंगे। ख़िलाफ़त इस्लामिया तो सारी दुनिया में एक ही होगी और समस्त हुकूमतें इलमी और रुहानी एतबार से ख़लीफ़-ए-वक़्त से मार्गदर्शन हासिल करेंगी। लेकिन उनके सयासी विषय में ख़लीफ़-ए-वक़्त का कोई दख़ल नहीं होगा। और कोई ख़लीफ़ा ख़ुद फ़ौज लेकर किसी हुकूमत पर हमला नहीं करेगा।

एक दोस्त ने प्रश्न किया कि नमाज़ में अत्त:यात पढ़ते वक़्त जब हम اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ أَيُّهَا النَّبِيُّ कहते हैं तो कहीं हम शिर्क के मुर्तक़िब तो नहीं हो रहे होते क्योंकि ये शब्द तो ज़िंदा इन्सानों के लिए बोले जाते हैं? इस प्रश्न का उत्तर अता फ़रमाते हुए हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने अपने पत्र तिथि 06 जून 2018 ई. में फ़रमाया :

मुस्तनद अहादीस से साबित है कि तशह्हुद में पढ़ी जाने वाली दुआ आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने ख़ुद सहाबा को सिखाई और फ़रमाया कि जब तुम यह दुआ करोगे तो तुम्हारी यह पुकार ज़मीन और आसमान में मौजूद अल्लाह के हर नेक बंदा तक पहुंच जाएँगी। (सही बुख़ारी किताबुल अज़ान)

इसलिए हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने ख़ुद यह वज़ाहत फ़र्मा दी कि तुम्हारी ये दुआ ज़िंदा लोगों को भी पहुंच रही है और जो वफ़ात पा चुके हैं उन्हें भी तुम्हारी दुआ की बरकतें मिल रही हैं। अत: इस किस्म की दुआओं में जो सम्बोधन का सीग़ा या हर्फ़-ए-निदा इत्यादि इस्तिमाल होता है, इस से किसी किस्म के वहम में मुबतला नहीं होना चाहिए कि हमारी दुआ का सम्बोधन तो फ़ौत हो चुका है, इस लिए कहीं यह शिर्क न शुमार हो।

इस में शिर्क वाली कोई बात नहीं, क्योंकि जिस तरह इस दुनिया में एक व्यक्ति की आवाज़ को दूसरे व्यक्ति तक पहुंचाने के लिए अल्लाह तआला ने हवा को माध्यम बनाया है, इसी तरह रुहानी दुनिया में अल्लाह तआला ने हमारी मुनाजात को फ़ौत शुदगान तक पहुंचाने के लिए अपने फ़रिश्तों को माध्यम बनाया है। इसलिए जब हम क़ब्रिस्तान जाते हैं तो वहां पर जो दुआ पढ़ते हैं, इस की इबतिदा भी "अस्सलामो अलैकुम या अहलिल कबूर" से ही होती है, जिसका नितांत यह अर्थ नहीं कि हम उन मुर्दों को देख रहे होते हैं या वे हमारे सामने मौजूद होते हैं।

इसलिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से प्रश्न किया गया कि अस्सलामो अलैकुम या अहलिल कबूर जो कहा जाता है क्या उसे मुर्दे सुनते हैं? इस पर हुज़ूर अलैहिस्सलाम फ़रमाया :

"देखो वे सलाम का उत्तर वाअलैकुम अस्सलाम तो नहीं देते, ख़ुदा तआला वह सलाम (जो एक दुआ है) उनको पहुंचा देता है। अब हम जो आवाज़ सुनते हैं इस में हवा एक माध्यम है लेकिन यह माध्यम मुर्दा और तुम्हारे मध्य नहीं लेकिन अस्सलामो अलैकुम में ख़ुदा तआला फरिश्तों को माध्यम बना देता है। इसी तरह दुरूद शरीफ़ है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को पहुंचा देते हैं।"

(अख़बार बदर तिथि 16 मार्च 1904 ई.)

पृष्ठ 1 का शेष

लेकिन वास्तव में उसकी नेअमतें ऐसी हैं कि इन्सानी दिमाग़ उन्हें समझ ही नहीं सकता। इस आयत में वास्तव में इस तरफ़ इशारा किया गया है कि इस दुनिया में तो उन्हें शैतानों से कोशिशें करनी पड़ती थी वहां वह इस कोशिशों से बिल्कुल बच जाएंगे और उनके दिल प्रत्येक पीड़ा से महफ़ूज़ हो जाएंगे और न अस्थाई तौर पर शैतान उनको नुक़्सान पहुंचा सकेगा न मुस्तक़िल तौर पर।

इस आयत से यह भी इस्तदलाल होता है कि जन्नत आलसी लोगों का ठिकाना नहीं बल्कि इस में रहने वाले भी काम करेंगे क्योंकि यदि काम नहीं करना होता तो थकान की नफ़ी की क्या ज़रूरत थी। अत: जो लोग यह समझते हैं कि जन्नत एक खाने पीने और ऐश करने का स्थान है वे ग़लती करते हैं। जन्नत तो उबूदियत का असल स्थान है जैसे फ़रमाया فَادْخُلِيْ فِيْ عِبٰدِيْ وَادْخُلِيْ جَنَّتِيْ (सूरत अल् फज्र) अर्थात कामिल उबूदियत का स्थान जन्नत में प्रवेश करते समय हासिल होगा और अबद काम किया करता हैं न कि सुस्त बैठता है। अत: असल काम का स्थान तो जन्नत ही है जहां इन्सान कामिल अबद हो जाएगा। जन्नत का पूर्ण आनंद इस में है कि भावनाओ की कश्मकश से आज़ाद हो कर इन्सान अपनी इबादात में आनंद ही आनंद महसूस करेगा और जिस काम में आनंद हासिल हो उस में थकान महसूस नहीं होती। आम तौर पर मुस्लमान जन्नत का नक़्शा पूअर हाउज़ (गरीबों के रखने की जगह) को समझते हैं कि काम कुछ नहीं करेंगे खाना मुफ़्त मिलता रहेगा और कोई वहां से बाहर भी नहीं निकालेगा । لَاحَوْلَ وَلَاقُوَّةَ اِلَّابِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ ۔

(तफ़सीर-ए-कबीर, भाग 4, पृष्ठ 83 प्रकाशन क़ादियान)

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :

1800 103 2131

(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)

Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

ख़ुत्बः जुमअः

अल्लाह तआला ने मुस्लमानों को इस अहम तरीन जंग में महान फ़तह प्रदान की

यरमूक की जंग के महान मार्के का ईमान में वृद्धि करने वाला वर्णन

आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के महान ख़लीफ़ा ेराशद फ़ारुके आज़म हज़रत उमर बिन पत्ताब पत्ताब रज़ियल्लाहु अन्हो की विशेषताओं और गुणों का वर्णन

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 17 सितम्बर 2021 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ

हज़रत उमर पत्ताब रज़ियल्लाहु अन्हो के ज़माने की घटनाओं का वर्णन चल रहा था। आज यरमूक की जंग के बारे में बयान करूँगा। यरमूक की जंग की तारीख़ के सम्बन्ध में रिवायात में मतभेद पाया जाता है। एक रिवायत तो यही है कि यह जंग पंद्रह हिज्री को लड़ी गई। कुछ के निकट यह तेराह हिज्री में फ़तह दमिशक़ से पहले लड़ी गई थी। एक रिवायत के अनुसार हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो को सबसे पहले जिस जंग में फ़तह की ख़ुशख़बरी पहुंची वह यरमूक की जंग ही थी। इस वक़्त हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की वफ़ात को बीस दिन गुज़र चुके थे। कुछ के निकट फ़तह-ए-दमिशक़ की ख़ुशख़बरी सबसे पहले मिली थी।

(तारीख़ दमिशक़ अल् कबीर ले इब्ने असाकिर, भाग 2 पृष्ठ 141-143 दारुल फ़िकर बेरूत 1995 ई.)

लेकिन बहरहाल दमिशक़ की फ़तह की ख़ुशख़बरी वाली बात ज़्यादा सही लगती है जो पहले हुई। साक्ष्य तो यही बताते हैं कि यरमूक की जंग हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के ज़माने में ही लड़ी गई थी। रूमी जब शिकस्त खा खा कर दमिश्क और हिम्ज़ इत्यादि से निकले थे तो अन्ताकिया पहुंचे। अन्ताकिया शाम का सरहदी शहर है। और हरक़्ल से फ़र्याद की कि अरब ने समस्त शाम को कुचल डाला है। हरक़्ल ने इस में से चंद होशयार और सम्मानित व्यक्तियों को दरबार में तलब किया और कहा कि अरब तुमसे ज़ोर में, संख्या में, सामान और हथियारों में कम हैं फिर तुम उनका मुक़ाबला क्यों नहीं कर सकते? क्यों नहीं मुक़ाबले में ठहर सकते? इस पर सब ने शर्म से सिर झुका लिया। किसी ने कोई उत्तर नहीं दिया लेकिन एक अनुभवी बुड्ढे ने अर्ज़ की कि अरब के अख़लाक़ हमारे अख़लाक़ से अच्छे हैं। वे रात को इबादत करते हैं। दिन को रोज़े रखते हैं। किसी पर अत्याचार नहीं करते। आपस में एक दूसरे से बराबरी के साथ मिलते हैं। और हमारा यह हाल है कि शराब पीते हैं। बदकारियाँ करते हैं। इक़रार की पाबंदी नहीं करते। औरों पर अत्याचार करते हैं और इस का यह असर है कि उनके काम में तो जोश है और दृढ़ता पाई जाता है और हमारा जो काम होता है हिम्मत और दृढ़ता से ख़ाली होता है।

क़ैसर वास्तव में शाम से निकल जाने का इरादा कर चुका था लेकिन हर शहर और हर ज़िला से गिरोह के गिरोह ईसाई फ़र्यादी चले आते थे। क़ैसर को सख़्त ग़ैरत आई और निहायत जोश के साथ आमादा हुआ कि अपनी शहनशाही का पूरा ज़ोर अरब के मुक़ाबले में लगा दिया जाए। रोम कुतुन्तुनिया, आरमानिया, हर जगह अहकाम भेजे कि समस्त फ़ौजें अन्ताकिया में एक तारीख़ निर्धारित तक हाज़िर हो जाएं। समस्त ज़िलों के अफ़िसरों को लिख भेजा कि जिस क़दर आदमी जहां से मुहय्या हो सकें रवाना किए जाएं। इन अहकाम का पहुंचना था कि फ़ौजों का एक तूफ़ान उमड़ आया। अन्ताकिया के चारों तरफ़ जहां तक निगाह जाती थी फ़ौजों का टिड्डी दल फैला हुआ था। बेशुमार फ़ौज थी।

हज़रत अबू उबेदा रज़ियल्लाहु अन्हो ने जो स्थान फ़तह कर लिए थे वहां के उमरा और रईस उनके इन्साफ़-ओ-इन्साफ़ के इस क़दर आशिक हो गए थे कि बावजूद धर्म की मुखालिफ़त के उन्होंने ख़ुद अपनी तरफ़ से दुश्मन की ख़बर लाने के लिए जासूस निर्धारित कर रखे थे। इस लिए उनके माध्यम से हज़रत अबू उबेदा रज़ियल्लाहु अन्हो को समस्त वाक़ियात की सूचना हुई। उन्होंने समस्त अफ़िसरों को जमा किया और खड़े हो कर एक प्रभावी तक़रीर की जिसका ख़ुलासा यह था मुसलमानो! ख़ुदा ने तुम को बार-बार जाँचा और तुम उस की जांच पर पूरे उतरे। इस लिए इसके बदले में ख़ुदा ने हमेशा तुमको मुज़फ़्फ़र-ओ-मंसूर रखा हमेशा सफ़लता हासिल हुई। अब तुम्हारा दुश्मन इस साज़ो सामान से तुम्हारे मुक़ाबले के लिए चला है कि ज़मीन काँप उठी है। अब बताओ क्या सलाह है? यज़ीद बिन अबी सुफ़ियान अमीर मुआविया के भाई थे वह खड़े हुए और कहा कि मेरी राय है कि औरतों और बच्चों को शहर में रहने दें और हम ख़ुद शहर के बाहर लश्कर आरा हों। इस के साथ ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो अम्र बिन आस को पत्र लिखा जाए कि दमिशक़ और फ़लस्तीन से चल कर सहायता को आएं। यहां से भी यही साबित होता है कि दमिशक़ की फ़तह पहले थी। शरहबील बिन हुसना ने कहा कि इस अवसर पर हर व्यक्ति को आज़ादाना राय देनी चाहिए। यज़ीद ने जो राय दी निसंदेह ख़ैर ख़्वाही से दी है लेकिन मैं इस का मुख़ालिफ़ हूँ। शहर वाले समस्त ईसाई हैं। सम्भव है कि वे द्वेष से हमारे परिवार को पकड़ कर क़ैसर के हवाले कर दें या ख़ुद मार डालें। ख़ुद ही उनके ख़िलाफ़ खड़े हो जाएं। हज़रत अबू उबेदा रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा कि इस की तदबीर यह है कि हम ईसाइयों को शहर से निकाल दें तो हमारे पत्नी बच्चे सुरक्षित हो जाऐंगे। शरहबील ने उठ कर कहा कि हे अमीर! तुझ को कदापि यह हक़ हासिल नहीं है। हमने इन ईसाइयों को इस शर्त पुरअम्न दिया है कि वे शहर में इतमिनान से रहें इसलिए वादा तोड़ना क्योंकर हो सकता है? हम एक अह्द कर चुके हैं। किस तरह इस अह्द को तोड़ें कि उनको शहर से निकाल दें। हज़रतअबू उबेदा रज़ियल्लाहु अन्हो ने अपनी ग़लती तस्लीम की लेकिन यह बेहस तै नहीं हुई कि आख़िर क्या-किया जाए। आम हाज़िरीन ने राय दी कि हिम्ज़ में ठहर के फ़ौजी इमदाद का इंतिज़ार किया जाए। अबू उबेदा रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा कि इतना वक़्त कहाँ है? आख़िर यह राय ठहरी कि हिम्ज़ को छोड़ कर दमिश्क रवाना हों, वहां ख़ालिद मौजूद हैं और अरब की सरहद क़रीब है। यह इरादा पक्का हो चुका तो हज़रत अबू उबेदा रज़ियल्लाहु अन्हो ने हबीब बिन मस्लमा को जो अफ़्सर ख़ज़ाना थे बुला कर कहा कि ईसाइयों से जो टैक्स या ख़राज लिया जाता है, जो भी टैक्स वसूल किया जाता है, इस वक़्त हमारी हालत ऐसी नाज़ुक है कि हम उनकी हिफ़ाज़त का ज़िम्मा नहीं उठा सकते। यह तो इसलिए था कि उनकी बेहतरी के लिए उनकी हिफ़ाज़त के लिए काम होगा लेकिन वह हम कर नहीं सकते। इसलिए जो कुछ उनसे वसूल हुआ है सब उनको वापस दे दो और उनसे कह दो कि हमको तुम्हारे साथ जो ताल्लुक़ था अब भी है लेकिन चूँकि इस वक़्त तुम्हारी हिफ़ाज़त के हम ज़िम्मेदार नहीं हो सकते इसलिए टैक्स जो हिफ़ाज़त का मुआवज़ा है तुम्हें वापस किया जाता है।

इस लिए कई लाख की रक़म जो वसूल हुई थी सारी वापस कर दी गई। ईसाइयों पर इस वाक़िया का इस क़दर असर हुआ कि वे रोते जाते थे और जोश के साथ कहते जाते थे कि ख़ुदा तुमको वापस लाए। यहूदीयों पर इस से भी ज़्यादा असर हुआ। उन्होंने कहा कि तौरात की क़सम! जब तक हम ज़िंदा हैं केसर हिम्ज़ पर क़बज़ा नहीं कर सकता। यह कह कर शहर की पनाह के दरवाज़े बंद कर दिए और हर जगह चौकी पहरा बिठा दिया। अबू उबेदा रज़ियल्लाहु अन्हो ने केवल हिम्ज़ वालों के साथ यह व्यवहार नहीं किया बल्कि जिस क़दर ज़िले फ़तह हो चुके थे हर जगह लिख भेजा कि टैक्स की जिस क़दर रक़म वसूल हुई है वापस कर दी जाए। उद्देश्य अबू उबैदा दमिशक़ को रवाना हुए और उन समस्त हालात से हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो को सूचना दी।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो यह सुनकर कि मुस्लमान रोमियों के डर से हिम्ज़ चले आए हैं निहायत दुखी हुए लेकिन जब उनको यह मालूम हुआ कि कुल फ़ौज और फ़ौज के अफ़सरों ने यही निर्णय किया है तो थोड़ा-बहुत संतोष हुआ और

फ़रमाया कि ख़ुदा ने किसी मस्लिहत से समस्त मुस्लमानों को इस राय पर सहमत क्या होगा। ये भी हवाले मिलते हैं कि पहले हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो से पूछा गया था और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने ही फ़रमाया था कि अगर तुम हिफ़ाज़त नहीं कर सकते तो उनका सब कुछ, जो कुछ भी टैक्स इत्यादि लिया है वापस करो। अबू उबेदा रज़ियल्लाहु अन्हो को हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने उत्तर लिखा कि मैं सहायता के लिए सईद बिन आमिर को भेजता हूँ लेकिन फ़तह-ओ-शिकस्त फ़ौज की कमी और अधिकता पर नहीं हुआ करती। अबू उबेदा रज़ियल्लाहु अन्हो ने दमिशक़ पहुंच कर समस्त अफ़िसरों को जमा किया और उनसे मुशावरत की। यज़ीद बिन अबी सुफ़ियान, शरह्बील बिन हुसना, मुअइज़् बिन जबल सबने मुख़्तलिफ़ राएं दीं। इसी समय में अम्र बिन आस का दूत पत्र लेकर पहुंचा जिस का यह मज़मून था कि अरदन के ज़िलों में आम बग़ावत फैल गई है और रोमियों की आमद आमद ने सख़्त तहलका डाल दिया है और हिम्ज़ को छोड़ कर चले आना निहायत बे रोबी का कारण हुआ है। अबू उबेदा रज़ियल्लाहु अन्हो ने उत्तर में लिखा कि हिम्ज़ को हमने डर कर नहीं छोड़ा बल्कि उद्देश्य यह था कि दुश्मन सुरक्षित स्थानों से निकल आए और इस्लामी फ़ौजें जो इधर उधर फैली हुई हैं एक जगह हो जाएं और पत्र में यह भी लिखा कि तुम अपनी जगह से न हतो। मैं वहीं आकर तुमसे मिलता हूँ। दूसरे दिन अबू उबेदा रज़ियल्लाहु अन्हो दमिशक़ से रवाना हो गए और अरदन की सीमा में यरमूक पहुंच कर क़ियाम किया। यरमूक शाम के करीब में नशीबी वादी थी जहां दरयाए अरदन बहता था। अम्र बिन आस भी यहीं आकर मिले। यह अवसर जंग की ज़रूरतों के लिए इस लिहाज़ से उचित था कि अरब की सरहद बनिसबत और समस्त स्थानों के यहां से क़रीब थी और पुश्त पर अरब की सरहद तक खुला मैदान था जिस से यह अवसर हासिल था कि ज़रूरत पर जहां तक चाहें पीछे हटते जाएं।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने सईद बिन आमिर के साथ जो फ़ौज रवाना की थी वह अभी नहीं पहुंची थी। उधर रोमियों की आमद और उनके सामान का हाल सुनकर मुस्लमान घबराए जाते थे। अबू उबेदा रज़ियल्लाहु अन्हो ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के पास एक और क़ासिद दौड़ाया और लिखा कि रूमी खुश्की और तरी से उबल पड़े हैं और जोश का यह हाल है कि फ़ौज जिस राह से गुज़रती है राहिब और ख़ानक़ाह नशीन जिन्हों ने कभी अकेले में क़दम बाहर नहीं निकाला वे भी निकल निकल कर फ़ौज के साथ होते जाते हैं। जब यह पत्र पहुंचा तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने मुहाजिरीन और अंसार को जमा किया और पत्र पढ़ कर सुनाया। समस्त सहाबा बे-इख़्तियार रो पड़े और निहायत जोश के साथ पुकार कर कहा कि अमीरुल मौमेनीन ख़ुदा के लिए हमें आज्ञा दें कि हम अपने भाईयों पर जा कर निसार हो जाएं। ख़ुदा-ना-ख़ासता उनका बाल भी बांका हुआ तो फिर जीना व्यर्थ है। मुहाजिरीन और अंसार का जोश बढ़ता जाता था यहां तक कि अब्दुर्रहमान बिन हिम्ज़ बिन ओफ़ रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा कि अमीरुल मौमेनीन! आप रज़ियल्लाहु अन्हो स्वयं सिपहसालार बनें और हमें साथ लेकर चलें लेकिन और सहाबा ने इस राय से मतभेद किया और राय यह ठहरी कि और इमदादी फ़ौजें भेजी जाएं। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने क़ासिद से दरयाफ़त किया कि दुश्मन कहाँ तक आ गए हैं? उसने कहा कि यरमूक से तीन चार मंज़िल का फ़ासिला रह गया है। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो निहायत दुखी हुए और फ़रमाया कि अफ़सोस अब क्या हो सकता है। इतने अरसा में क्योंकर सहायता पहुंच सकती है? अबू उबेदा रज़ियल्लाहु अन्हो के नाम निहायत प्रभावी शब्दों में एक पत्र लिखा और क़ासिद से कहा कि ख़ुद एक एक सफ़ में जा कर यह पत्र सुनाना और ज़बानी कहना कि उमर तुम लोगों को सलाम कहता है और कहते हैं कि हे इस्लाम वालों! बेजिगरी से लड़ो और अपने दुश्मनों पर शेरों की तरह झपटो और तलवारों से उनकी खोपड़ियों को काट डालो और चाहिए कि वे लोग तुम्हारे निकट चियूंटियों से भी हक़ीर हों। उनकी कसरत तुम लोगों को ख़ौफ़ज़दा न करे और तुम में से जो अभी तुम से नहीं मिले उनकी वजह से परेशान नहीं होना। ये अजीब संयोग है कि जिस दिन क़ासिद अबू उबेदा के पास आया उसी दिन सईद बिन आमिर भी हज़ार आदमी के साथ पहुंच गए। मुस्लमानों को निहायत तक़वियत हुई और उन्होंने निहायत दृढ़ता के साथ लड़ाई की तैयारीयां शुरू कीं।

मआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हो को जो बड़े रुतबे के सहाबी थे मेमना पर निर्धारित किया। क़ुब्बास बिन अशीम को मेयसरा और हाशिम बिन उत्बा को पैदल फ़ौज की अफ़्सरी दी। अपने रिकाब की फ़ौज के चार हिस्से किए। एक को अपनी रिकाब में रखा बाक़ी पर केस बिन हुम्यरा, मेयसरा बिन मसरूक, अम्र बिन तुफ़ैल को निर्धारित किया। ये तीनों बहादुर समस्त अरब में चुने हुए थे अर्थात बहुत बहादुर कहलाए जाते थे और इस वजह से "फ़ारेसुल अरब" कहलाते थे। रूमी भी बड़े सामान से निकले थे। दो लाख से ज़्यादा जमईयत थी और चौबीस सफ़ें थीं जिनके आगे आगे उनके मज़हबी पेशवा हाथों में सलीबें लिए जोश दिलाते जाते थे।

फ़ौजें आमने सामने आ गईं तो एक बतरीक सफ़ चीर कर निकला और कहा कि मैं तन्हा लड़ना चाहता हूँ। बतरीक, ईसाइयों के मज़हबी पेशवाओं को कहते हैं। मेयसरा बिन मस्रूक़ ने घोड़ा बढ़ाया परन्तु चूँकि हरीफ़ अत्यधिक बलवान और जवान था। ख़ालिद ने रोका और क़ैस बिन हुबेर की तरफ़ देखा। वह शेअर पढ़ते हुए आगे बढ़े। क़ैस इस तरह झपट कर पहुंचे कि बतरीक हथियार भी नहीं सँभाल सका और उनका वार चल गया। तलवार सिर पर पड़ी और कवच को काटती हुई गर्दन तक उतर गई। बित डगमगा कर घोड़े से गिरा। साथ ही मुस्लमानों ने तकबीर का नारा बुलंद किया। ख़ालिद ने कहा शगुन अच्छा है और अब ख़ुदा ने चाहा तो आगे फ़तह हमारी है। ईसाइयों ने ख़ालिद के साथ चलने वाले अफ़िसरों के मुक़ाबले में जुदा-जुदा फ़ौजें निर्धारित कीं लेकिन सबने शिकस्त खाई और इस दिन यहीं तक नौबत पहुंची कि लड़ाई स्थगित हो गई। रोमियों ने जब देखा कि हम तो शिकस्त खा रहे हैं तो रात को रोमियों के सिपहसालार बाहान ने सरदारों को जमा कर के कहा कि अरबों को शाम की दौलत का मज़ा पड़ चुका है। बेहतर यह है कि धन और वस्तुओं की लालच दिला कर उनको यहां से टाला जाए बजाय जंग करने के। सबने इस राय से सहमित दी। दूसरे दिन अबू उबेदा रज़ियल्लाहु अन्हो के पास दूत भेजा कि किसी सम्मानित अफ़्सर को हमारे पास भेज दो। हम इस से सुलह के विषय में बात चीत करना चाहते हैं। अबू उबेदा रज़ियल्लाहु अन्हो ने ख़ालिद का इंतिख़ाब किया। क़ासिद जो संदेश लेकर आया उस का नाम जॉर्ज था। उर्दू सीरत निगारों ने जॉर्ज लिखा है लेकिन अरब दानों के लिए मैं बता दूं कि अरबी पुस्तकों में इस का नाम जरजा वर्णन हुआ है। बहरहाल जिस वक़्त वह पहुंचा उस वक़्त शाम हो चुकी थी। ज़रा देर के बाद मग़रिब की नमाज़ शुरू हुई। मुस्लमान जिस ज़ौक़ और शौक़ से तकबीर कह कर खड़े हुए और जिस लगन और सुकून और विनय और अदब और नर्म आँखों से उन्होंने नमाज़ अदा की। क़ासिद निहायत हैरत और आश्चर्य की निगाह से देखता रहा यहां तक कि जब नमाज़ हो चुकी तो उसने अबू उबेदा रज़ियल्लाहु अन्हो से कुछ प्रश्न किए जिन में एक यह था कि तुम ईसा की निसबत किया मत रखते हो। अबू उबेदा रज़ियल्लाहु अन्हो ने क़ुरआन की ये आयतें पढ़ीं कि

إِنَّ مَثَلَ عِيْسٰى عِنْدَ اللّٰهِ كَمَثَلِ اٰدَمَ ؕ خَلَقَهٗ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ قَالَ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ(آل عمران :60)يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ لَا تَغْلُوْا فِيْ دِيْنِكُمْ وَلَا تَقُوْلُوْا عَلَى اللّٰهِ اِلَّا الْحَقَّ ؕ اِنَّمَا الْمَسِيْحُ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ رَسُوْلُ اللّٰهِ وَكَلِمَتُهٗ ۚ اَلْقٰىهَآ اِلٰى مَرْيَمَ وَرُوْحٌ مِّنْهُ ۫ فَاٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖ ۟ وَلَا تَقُوْلُوْا ثَلٰثَةٌ ۟ اِنْتَهُوْا خَيْرًا لَّكُمْ ؕ اِنَّمَا اللّٰهُ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ؕ سُبْحٰنَهٗٓ اَنْ يَّكُوْنَ لَهٗ وَلَدٌ ۘ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيْلًا ○ لَنْ يَّسْتَنْكِفَ الْمَسِيْحُ اَنْ يَّكُوْنَ عَبْدًا لِّلّٰهِ وَلَا الْمَلٰٓئِكَةُ الْمُقَرَّبُوْنَ(النساء: 172-173

कि (याद रखों) ईसा का हाल अल्लाह के निकट निश्चित रूर से आदम के हाल की तरह है। उसे अर्थात आदम को उसने ख़ुशक मिट्टी से पैदा किया। फिर उस के सम्बन्ध में कहा कि तू वजूद में आजा तो वह वजूद में आने लगा। हे अहल किताब! तू अपने दीन के विषय में झूठ से काम न ले और अल्लाह के सम्बन्ध में सच्ची बात के सिवा कुछ न कहो। मसीह ईसा इब्ने मरियम अल्लाह का केवल एक रसूल और उस की एक बशारत था जो उसने मर्यम पर नाज़िल की थी और उस की तरफ़ से एक रहमत था। इसलिए तुम अल्लाह पर और इस के समस्त रसूलों पर ईमान लाओ और यूं न कहो कि ख़ुदा तीन हैं। इस अमर से बाज़ आ जाओ। यह तुम्हारे लिए बेहतर होगा। अल्लाह ही अकेला उपास्य है। वह इस बात से पाक है कि उस के हाँ औलाद हो। जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है सब उसी का है और अल्लाह की हिफ़ाज़त के बाद और किसी की हिफ़ाज़त की ज़रूरत नहीं। मसीह कदापि इस अमर को बुरा नहीं मानेगा कि वह अल्लाह का एक बंदा समझा जाए और न ही मुक़र्रब फ़रिश्ते उसे बुरा मनाएंगे।

बहरहाल अनुवाद करने वाले ने इन आयात का अनुवाद किया तो जॉर्ज जो क़ासिद था बे-इख़्तियार पुकार उठा कि मैं गवाही देता हूँ कि ईसा की यही विशेषताएं हैं और मैं गवाही देता हूँ कि तुम्हारा पैग़ंबर सच्चा है।

यह कह कर उसने कलिमा तौहीद पढ़ा और मुस्लमान हो गया और वह अपनी क़ौम के पास वापस नहीं जाना चाहता था लेकिन हज़रत अबू उबेदा रज़ियल्लाहु अन्हो ने इस ख़्याल से कि रोमियों को वादा तोड़ने का भ्रम न हो उसे मजबूर किया

और कहा कि कल यहां से हमारा जो सफ़ीर जाएगा उस के साथ वापस चले आना, अभी तुम वापस जाओ। दूसरे दिन हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो रोमियों के लश्कर के स्थान में गए। रोमियों ने अपनी शौकत दिखाने के लिए पहले से ही इंतिज़ाम कर रखा था कि रास्ते के दोनों जानिब दूर तक सवारों की सफ़ें क़ायम थीं जो सिर से पांव तक लोहे में ग़र्क़ थे लेकिन हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो ने इस बेपरवाही और तहक़ीर की निगाह से उन पर नज़र डाली और इस तरह नज़र डालते जाते थे जिस तरह शेर बकरियों के रेवड़ को चीरता चला जाता है।

बाहान के खीमे के पास पहुंचे तो उसने निहायत सम्मान के साथ स्वागत किया और ला कर अपने पास अपने बराबर बिठाया। अनुवाद के माध्यम से गुफ़्तगु शुरू हुई। बाहान ने मामूली बातचीत के बाद लैक्चर के तरीक़े पर तक़रीर शुरू की। हज़रत ईसा की तारीफ़ के बाद क़ैसर का नाम लिया और फ़ख़र से कहा कि हमारा बादशाह समस्त बादशाहों का शहनशाह है। अनुवादक ने इन शब्दों का अभी पूरा अनुवाद नहीं किया था कि ख़ालिद ने बाहान को रोक दिया और कहा कि तुम्हारा बादशाह ऐसा ही होगा लेकिन हमने जिसको सरदार बनाया है उस को एक लम्हे के लिए भी अगर बादशाही का ख़्याल आए तो हम फ़ौरन उस को स्थगित कर दें।

बाहान ने फिर तक़रीर शुरू की और अपनी शान और दौलत का फ़ख़र वर्णन कर के कहा। अरब वाले तुम्हारी क़ौम के लोग हमारे मुल्क में आकर आबाद हुए। हमने हमेशा उनके साथ दोस्ताना व्यवहार किए। हमारा ख़्याल था कि इन विशेष व्यवहार का समस्त अरब धन्यवादी होगा लेकिन आशा के विपरीत तुम हमारे मुल्क पर चढ़ आए और चाहते हो कि हमको हमारे मुल्क से निकाल दो। तुम्हें मालूम नहीं कि बहुत सी क़ौमों ने कई बार ऐसे इरादे किए लेकिन कभी सफ़ल नहीं हुईं। अब तुम जो हो समस्त दुनिया में तुमसे ज़्यादा कोई क़ौम जाहिल नहीं है। जानवर और बे-साज़ो सामान नहीं है, तुम्हें यह हौसला हुआ है कि हमारे पर चढ़ाई कर दो लेकिन हम इस पर भी दरगुज़र करते हैं बल्कि अगर तुम यहां से चले जाओ तो इनाम के तौर पर सिपहसालार को दस हज़ार दीनार और अफ़िसरों को हज़ार हज़ार और आम सिपाहियों को सौ-सौ दीनार दिला दिए जाऐंगे। हालाँकि एक बहुत बड़ी फ़ौज तो ख़ुद उन्होंने मुस्लमानों के ख़िलाफ़ जमा की थी कि मुस्लमानों को ख़त्म किया जाए लेकिन जब देखा कि जंग जीतना आसान नहीं तो फिर ये शर्तें लगाईं। बहरहाल बाहान अपनी तक़रीर ख़त्म कर चुका तो हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो उठे और ख़ुदा की प्रशंसा और दुआ के बाद कहा कि निसंदेह तुम दौलतमंद हो, मालदार हो, साहब-ए-हुकूमत हो। तुमने अपने हमसाया अरबों के साथ जो सुलूक किया वह भी हमें मालूम है लेकिन यह तुम्हारा कुछ एहसान नहीं था बल्कि इशाअत-ए-मज़हब की एक तदबीर थी। तुम अपना मज़हब फैलाना चाहते थे जिसका यह असर हुआ कि वे अरब ईसाई हो गए और आज ख़ुद हमारे मुक़ाबले में तुम्हारे साथ हो कर हमसे लड़ रहे हैं। यह सच्च है कि हम निहायत मुहताज, तंग-दस्त और ख़ाना-ब-दोश थे। हमारे अत्याचार और जहालत का यह हाल था कि क़वी जो मज़बूत आदमी था वह कमज़ोर को पीस डालता था। क़बायल आपस में लड़ लड़ कर बर्बाद होते जाते थे लेकिन ख़ुदा ने हम पर रहम किया और एक पैग़ंबर भेजा जो ख़ुद हमारी क़ौम से था और हम में सबसे ज़्यादा शरीफ़, ज़्यादा दयालु, ज़्यादा पाक प्रकृति वाला था। उसने हमें तौहीद सिखाई और बतला दिया कि ख़ुदा का कोई शरीक नहीं। वह पत्नी औलाद नहीं रखता, वह बिल्कुल अकेला है। उसने हमें यह भी हुक्म दिया कि हम इन अक़ायद को समस्त दुनिया के सामने पेश करें जिसने उनको माना वह मुस्लमान है और हमारा भाई है। जिस ने नहीं माना लेकिन टैक्स देना क़बूल करता है उस के हम साथी और रक्षक हैं। जिसको दोनों से इंकार है उस के लिए तलवार है। जो नहीं मानते और फिर लड़ाई करने को भी तैयार हैं तो फिर हम भी तैयार हैं। बाहान ने टैक्स का नाम सुनकर एक ठंडी सांस भरी और अपने लश्कर की तरफ़ इशारा कर के कहा कि ये मर कर भी टैक्स नहीं देंगे। हम टैक्स लेते हैं देते नहीं। उद्देश्य कोई मुआमला तै नहीं हुआ और ख़ालिद उठकर चले आए। अब इस आख़िरी लड़ाई की तैयारीयां शुरू हुईं। इस के बाद रूमी फिर कभी सँभल नहीं सके। हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो के चले आने के बाद बाहान ने सरदारों को जमा किया और कहा कि तुमने सुना, अरब वालों का दावा है कि जब तक तुम उनकी रियाया न बन जाओ उनके हमले से सुरक्षित नहीं रह सकते। तुम्हें उनकी ग़ुलामी स्वीकार है? समस्त अफ़िसरों ने बड़े जोश से कहा कि हम मर जाऐंगे परन्तु यह अपमान स्वीकार नहीं हो सकता।

सुबह हुई तो रूमी इस जोश और अपने सामान के साथ निकले कि मुस्लमानों को भी हैरत हो गई। हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो ने यह देखकर अरब के आम क़ायदे के ख़िलाफ़ नए तौर से फ़ौज तैयार की। जब हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो ने देखा कि रूमी इस जोश और तैयारी से निकले हैं तो उन्होंने अरब का जो आम क़ायदा था लड़ाई करने का उस के ख़िलाफ़, उस के उलट एक नए तरीक़े से फ़ौज को सामने खड़ा किया। और फ़ौज जो तीस पैंतीस हज़ार थी उस के छत्तीस हिस्से किए और आगे पीछे निहायत तर्तीब के साथ इस क़दर सफ़ें क़ायम कीं। क़लब अबू उबेदा को दिया, मेयमना पर अम्र बिन आस और शरह्बील मामूर हुए, मेयसरा यज़ीद बिन अबू सूफ़ियान की कमान में था। इसके अतिरिक्त हर सफ़ पर अलग-अलग जो अफ़्सर निर्धारित किए तो चुन कर उन लोगों को किया जो बहादुरी और फ़ुनून-ए-जंग में महारत रखते थे। ख़ुतबा जो अपने ज़ोर कलाम से लोगों में हलचल डाल देते थे, ऐसे वक्ता थे जो लोगों में जोश पैदा करने वाले थे इस ख़िदमत पर मामूर हुए कि पुर जोश तक़रीरों से फ़ौज को जोश दिलाएँ। इन्ही में अबू सूफ़ियान भी थे जो फ़ौजों के सामने ये शब्दों कहते फिरते थे कि अल्लाह अल्लाह! तुम लोग अरब के मुहाफ़िज़ और इस्लाम के सहायक हो और वे लोग रुम के मुहाफ़िज़ और शिर्क के सहायक हैं। हे अल्लाह ये दिन तेरे अय्याम में से है। हे अल्लाह अपने बंदों पर अपनी सहायता नाज़िल फ़र्मा। अम्र बिन आस कहते फिरते थे कि हे लोगो अपनी आँखें नीची रखों और घुटनों के बल बैठ जाओ और अपने नेज़ों को तान लो और अपनी जगह और अपनी सफ़ों में जम जाओ। जब तुम्हारा दुश्मन तुम पर हमला करे तो उन्हें मोहलत दो यहां तक कि जब वे नेज़ों की नोक की ज़द में आ जाए तो उन पर शेरों की तरह झपट पड़ो। उस ख़ुदा की क़सम जो रास्ती पर ख़ुश होता है और इस पर सवाब देता है और जो झूठ से नाराज़ होता है और इस पर सज़ा देता है और एहसान की जज़ा देता है, निश्चित रूर से मुझे यह ख़बर मिली है कि मुस्लमान बस्ती के बाद बस्ती और महल के बाद महल को फ़तह करते हुए इस मुल्क पर फ़तह हासिल करेंगे। अत: उन लोगों की जमईयत और उनकी संख्यां तुम्हें भयभीत न करे। अगर तुम लोगों ने साबित क़दमी से लड़ाई की तो ये लोग हजल अर्थात तीतर जो एक परिंदा है उसके बच्चों की तरह भयभीत हो कर मुंतशिर हो जाऐंगे।

मुस्लमान फ़ौज की संख्यां जबकि कम थी अर्थात तीस पैंतीस हज़ार से ज़्यादा आदमी नहीं थे लेकिन समस्त अरब में मुंतख़ब थे। उनमें से ख़ास वे बुज़ुर्ग जिन्हों ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का चेहरा मुबारक देखा था एक हज़ार थे। सौ बुज़ुर्ग वे थे जो बदर की जंग में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथी थे। अरब के प्रसिद्ध क़बायल में से दस हज़ार से ज़्यादा केवल अज़द के क़बीले के लोग थे। हिम्ज़ की एक बड़ी संख्यां, जमाअत थी। हमदान, खौलान, लहम, जुज़ाम इत्यादि के प्रसिद्ध बहादुर थे। इस मार्के की एक यह भी विशेषता है कि महिलाएं भी इस में शामिल थीं और निहायत बहादुरी से लड़ीं। अमीर मुआविया की माँ, अबू सुफ़ियान की पत्नी हिंद, हज़रत हिंद रज़ियल्लाहु अन्हा जो बाद में इस्लाम ले आई थीं हमला करती हुई बढ़ती थीं तो पुकारती थीं कि तुम इन ना मख़्तूनों अर्थात इन काफ़िरों को अपनी तलवारों से काट कर रख दो। इसी तरह अबू सूफ़ियान की बेटी और अमीर मुआविया की बहन जुवेरिया ने एक जमाअत के साथ निकल कर, अपने पति के साथ मिलकर रूमी फ़ौज का मुक़ाबला किया और एक शदीद लड़ाई में शहीद हो गईं। मिक्दाद जो निहायत ख़ुश-आवाज़ थे फ़ौज के आगे आगे सूरा अनफ़ाल जिसमें जिहाद की तरग़ीब है तिलावत करते जाते थे।

उधर रोमियों के जोश का यह आलम था कि तीस हज़ार व्यक्तियों ने पांव में बेड़ियाँ पहन ली कि हटने का ख़्याल तक न आए और अपने पांव को भी एक दूसरे के साथ बांध दिया।

जंग की इबतिदा रोमियों की तरफ़ से हुई। दो लाख का टिड्डी दल लश्कर एक साथ बढ़ा। हज़ारों पादरी और बिशप हाथों में सलीब लिए आगे बढ़े और हज़रत ईसा की जय पुकारते आते थे। यह साज़ो सामान देखकर एक व्यक्ति की ज़बान से बे-इख़्तियार निकला कि अल्लाहु-अकबर! किस क़दर बे-इंतिहा फ़ौज है। हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो ने जोश से कहा चुप रह। ख़ुदा की क़सम! मेरे घोड़े के सुम अच्छे होते तो मैं कह देता कि ईसाई इतनी ही फ़ौज और बढ़ा लें। उद्देश्य ईसाइयों ने निहायत ज़ोर शोर से हमला किया और तीरों का मीना बरसाते बढ़े। मुस्लमान देर तक साबित-क़दम रहे लेकिन हमला इस ज़ोर का था कि मुस्लमानों का मेमना टूट कर फ़ौज से अलग हो गया और निहायत बे-तरतीबी से पीछे हटा। पीछे हटने वाले हटते हटते औरतों के ख़ैमागाह तक पहुंच गए। औरतों को मुस्लमानों की यह हालत देखकर सख़्त ग़ुस्सा आया और ख़ेमा की लकड़ियाँ उखाड़ लीं और पुकारा कि नामर्दों इधर आए तो लकड़ियों से तुम्हारे सिर तोड़ देंगी। हिंद अबू सूफ़ियान की पत्नी हाथों में लाठी लेकर आगे बढ़ी। अन्य महिलाएं भी उनके पीछे

पीछे आगे बढ़ी। हिंद ने अबू सूफ़ियान को भागते देखा तो उनके घोड़े के मुँह पर मेख़ मारते हुए कहा कि किधर जा रहे हो? वापस आओ और जंग के मैदान में जाओ।

इसी तरह एक और रिवायत है इस के अनुसार हिंद लकड़ी उठा कर अबू सूफ़ियान की तरफ़ लपकीं और कहा कि ख़ुदा की क़सम! तुम दीन अहक़ की मुख़ालिफ़त करने और ख़ुदा के सच्चे रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को झुठलाने में बहुत सख़्त थे। आज अवसर है कि मैदान-ए-जंग में दीन-ए-हक़ की सर-बुलंदी और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की प्रसंता के लिए अपनी जान क़ुर्बान कर दो और ख़ुदा के सामने सुर्ख़रु हो जाओ।

अबू सूफ़ियान को सख़्त ग़ैरत आई और पलट कर हाथ में तलवार लिए दुश्मन के टिड्डी दल लश्कर में घुस गया। एक और बहादुर मुस्लमान औरत जिनका नाम खोला था वे यह शेअर पढ़ कर लोगों को ग़ैरत दिलाती थीं कि

وَلَا فَعَنْ قَلِيْلٍ مَا تَرٰى سَبِيَّاتِ يَا هَارِبًا عَنْ نِسْوَةٍ تَقِيَّاتِ
حَظِيَّاتٍ وَلَا رَضِيَّاتِ

कि हे संयम धारण करने वाली औरतों से भागने वाले! जल्द तू उन्हें क़ैदी देखेगा। न वे बलंद मर्तबा पर होंगे और न ही वे पसंदीदा होंगे। ये हालत देखकर मुआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हो जो मेमना के एक हिस्सा के सिपहसालार थे, घोड़े से कूद पड़े और कहा कि मैं तो पैदल लड़ता हूँ लेकिन कोई बहादुर इस घोड़े का हक़ अदा कर सके तो घोड़ा हाज़िर है। उनके बेटे ने कहा कि हाँ ये हक़ में अदा करूँगा क्योंकि मैं सवार हो कर अच्छा लड़ सकता हूँ। उद्देश्य दोनों बाप बेटे फ़ौज में घुस गए और दिलेरी से जंग की कि मुस्लमानों के उखड़े हुए पांव सँभल गए। साथ ही हज्जाज जो क़बीला जुबेदा के सरदार थे, पाँच सौ आदमी लेकर बढ़े और ईसाइयों को जो मुस्लमानों का पीछा करते चले आते थे रोक लिया। मेमना में क़बीला अज़द हमले के शुरू से साबित-क़दम रहा। ईसाइयों ने लड़ाई का सारा ज़ोर उन पर डाला लेकिन वे पहाड़ की तरह जमे रहे। जंग में यह शिद्दत थी कि फ़ौज में हर तरफ़ सिर, हाथ, बाज़ू कट कट कर गिरते जाते थे लेकिन उनके पैर नहीं कांपते थे। अम्र बिन तुफ़ैल जो क़बीला के सरदार थे तलवार मारते जाते थे और ललकारते जाते थे! देखना मुस्लमानों पर तुम्हारी वजह से दाग़ न आए। नौ बड़े बड़े बहादुर उनके हाथ से मारे गए और आख़िर ख़ुद भी वह शहीद हुए।

हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो ने अपनी फ़ौज को पीछे लगा रखा था। दफ़अतन सफ़ चीर कर निकले और इस ज़ोर से हमला किया कि रोमियों की सफ़ें पलट दीं। अकरमा ने जो अबू जहल के बेटे थे घोड़ा आगे बढ़ाया और कहा ईसाइयों! मैं किसी ज़माने में कुफ्र की हालत में ख़ुद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से लड़ चुका हूँ। क्या आज तुम्हारे मुक़ाबले में मेरा पांव पीछे पड़ सकता है। यह कह कर फ़ौज की तरफ़ देखा और कहा मरने पर कौन बैअत है!

चार-सौ व्यक्तियों ने जिन में ज़रार बिन अज़द भी थे मरने पर बैअत की और इस साबित क़दमी से लड़े कि क़रीबन सब के सब वहीं कट कर रह गए। अकर्मा की लाश मक़्तूलों के ढेर में मिली। कुछ-कुछ दम बाक़ी था। ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो ने अपनी रानों पर उनका सिर रखा और गले में पानी टपका कर कहा ख़ुदा की क़सम उमर रज़ियल्लाहु अन्हो का गुमान ग़लत था कि हम शहीद हो कर नहीं मरेंगे। उद्देश्य अकर्मा रज़ियल्लाहु अन्हो और उनके साथी जबकि स्वयं हलाक हो गए लेकिन रोमियों के हज़ारों आदमी बर्बाद कर दिए।

ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो के हमलों ने और भी उनकी ताक़त तोड़ दी यहां तक कि आख़िर उनको पीछे हटना पड़ा और ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो उनको दबाते हुए सिपहसालार दोरुन्जार तक पहुंच गए। दोरुन्जार और रोमी अफ़िसरों ने आँखों पर रूमाल डाल लिए कि अगर ये आँखें फ़तह की सूरत न देख सकें तो शिकस्त भी न देखें। ठीक उसी समय जब इधर मेयमना में मारने का बाज़ार गर्म था तो इब्ने कनातीर, जो रोमियों के मेयमना का सरदार था, ने मेयमना पर हमला किया। बदक़िस्मती से इस हिस्सा में अक्सर लहम और गस्सन के क़बीले के आदमी थे जो शाम के चरों तरफ़ में रहा करते थे और एक मुद्दत से रोम का ख्याल रखते थे। रोमियों को टैक्स दिया करते थे तो रोमियों का जो रोब उनके दिलों में समाया हुआ था उस का यह प्रभाव हुआ कि पहले ही हमले में उनके पांव उखड़ गए। मुस्लमान होने के बावजूद भी वे पुराना रोब चल रहा था इस से भयभीत हो गए, पांव उखड़ गए लेकिन बहरहाल अफ़सरों ने भी जुर्रत दिखाई। अगर अफ़सरों ने बेहिम्मती की होती तो लड़ाई का अंत हो चुका होता। रूमी भागते हुओं का पीछा करते हुए ख़ेमों तक पहुंच गए। महिलाएं ये हालत देखकर बे-इख़्तियार निकल पढ़ी और उनकी बहादुरी ने ईसाइयों को आगे बढ़ने से रोक दिया। फ़ौज जबकि निढ़ाल हो गई थी लेकिन अफ़िसरों में से कुब्बास बिन अशीम, सईद बिन ज़ैद, यज़ीद बिन अबी सुफ़ियान, अम्र बिन आस, शरह्बील बिन हसना बहादुरी की दाद दे रहे थे। कुब्बस के हाथ से तलवारें और नेज़े टूट कर गिरते जाते थे परन्तु उनके तेवर परबल नहीं आता था। नेज़ा टूट कर गिरता तो कहते कोई है जो इस व्यक्ति को हथियार दे जिसने ख़ुदा से इक़रार किया है कि मैदान-ए-जंग से हटेगा तो मर कर हटेगा। लोग फ़ौरन तलवार या नेज़ा उनके हाथ में ला कर दे देते और फिर वे शेर की तरह झपट कर दुश्मन पर जा पड़ते। अबुलअवर घोड़े से कूद पड़े और अपनी रिकाब की फ़ौज से सम्बोधित हो कर कहा कि सब्र और दृढ़ता दुनिया में इज़्ज़त है और मरने के पश्चात रहमत। देखना यह दौलत हाथ से ना जाने पाए। सईद बिन ज़ैद ग़ुस्सा में घुटने टेके हुए खड़े थे। रूमी उनकी तरफ़ बढ़े तो शेर की तरह झपटे और मक़दमे के अफ़सर को मार कर गिरा दिया। यज़ीद बिन अबू सूफ़ियान मुआविया के भाई बड़ी साबित क़दमी से लड़ रहे थे। संयोग से उनके बाप अबू सूफ़ियान जो फ़ौज को जोश दिलाते फिरते थे उनकी तरफ़ आ निकले और बेटे को देखकर कहा कि हे मेरे बेटे इस वक़्त मैदान में एक-एक सिपाही शुजाअत के जोहर दिखा रहा है। तू सिपहसालार है और सिपाहियों के सम्बन्ध में तुझ पर शुजाअत का हक़ ज़्यादा है। तेरी फ़ौज में से एक सिपाही भी इस मैदान में तुझ से बाज़ी ले गया तो तेरे लिए शर्म की बात है। शरह्बील का यह हाल था कि रोमियों का चारों तरफ़ से नरगा था और यह बीच में पहाड़ की तरह खड़े थे और क़ुरआन की यह आयत पढ़ते थे कि

إِنَّ اللّٰهَ اشْتَرٰى مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ اَنْفُسَهُمْ وَاَمْوَالَهُمْ بِاَنَّ لَهُمُ الْجَنَّةَ يُقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَيَقْتُلُوْنَ وَيُقْتَلُوْنَ(التوبة:111)

कि अल्लाह ने मोमिनों से उनकी जानों और उनके मालों को इस वादे के साथ ख़रीद लिया है कि उनको जन्नत मिलेगी क्योंकि वे अल्लाह के रास्ते में लड़ते हैं। अत: या तो वे अपने दुश्मनों को मार लेते हैं या ख़ुद मारे जाते हैं और नारा मारते थे कि ख़ुदा के साथ सौदा करने वाले और ख़ुदा के पड़ोसी बनने वाले कहाँ हैं? यह आवाज़ जिसके कान में पड़ी, बे-इख़्तियार लौट पड़ा यहां तक कि उखड़ी हुई फ़ौज फिर सँभल गई और शरह्बील ने उनको लेकर इस बहादुरी से जंग की कि रूमी जो लड़ते चले आते थे बढ़ने से रुक गए। उधर महिलाएं ख़ेमों से निकल निकल कर फ़ौज की पुश्त पर आ खड़ी हुईं और चिल्ला कर कहती थीं कि मैदान से क़दम हटाया तो फिर हमारा मुँह नहीं देखना। लड़ाई के दोनों पहलू अब तक बराबर थे बल्कि ग़लबा का पल्ला रोमियों की तरफ़ था जो केस बिन हुबेरा जिनको ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़ौज का एक हिस्सा देकर मेयसरा की पुश्त पर निर्धारित कर दिया था अक़ब से निकले और इस तरह टूट कर हमला किया कि रूमी सरदारों ने बहुत सँभाला परन्तु फ़ौज सँभल नहीं सकी। समस्त सफ़ें बिखर गईं और घबरा कर पीछे हटीं। साथ ही सईद बिन ज़ैद ने क़लब से निकल कर हमला किया। रूमी दूर तक हटते चले गए यहां तक कि मैदान के सिरे पर जो नाला था उस के किनारे तक आ गए। थोड़ी देर में उनकी लाशों ने वह नाला भर दिया और मैदान ख़ाली हो गया। यूं अल्लाह तआला ने मुस्लमानों को इस अहम तरीन जंग में महान फ़तह प्रदान की।

इस लड़ाई की यह घटना याद रखने के योग्य है कि जिस वक़्त घमसान की लड़ाई हो रही थी हबास बिन केस जो एक बहादुर सिपाही थे बड़ी जाँबाज़ी से लड़ रहे थे। इसी समय में किसी ने उनके पांव पर तलवार मारी और एक पांव कट कर अलग हो गया। हब्बास को ख़बर तक नहीं हुई। थोड़ी देर के बाद होश आया तो ढूंडते फिरते थे कि मेरे पांव का क्या हुआ? जब पांव की तरफ़ देखा तो ख़्याल आया कि पांव देखूं कहाँ है तो फिर पता लगा कि पांव ग़ायब है। उनके क़बीले के लोग इस वाक़िया पर हमेशा फ़ख़र किया करते थे।

रोमियों के किस क़दर आदमी मारे गए उनकी संख्यां में मतभेद है। तिब्री और अज़दी ने लाख से अधिक वर्णन किया है। बलाज़री ने सत्तर हज़ार लिखा है। मुस्लमानों की तरफ़ से तीन हज़ार का नुक़्सान हुआ जिनमें अकर्मा, ज़िरार बिन अज्वर, हिशाम बिन आसी, अबान बिन सईद इत्यादि थे। क़ैसर अन्ताकिया में था कि उसको शिकस्त की ख़बर पहुंची। उसी वक़्त उसने क़ुस्तुनतुनिया की तैयारी की और चलते वक़्त शाम की तरफ़ रुख कर के कहा कि "अल्विदा हे शाम!" अबू उबेदा ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो को फ़तह की ख़ुशख़बरी का पत्र लिखा और एक मुख़्तसर सी सिफ़ारत भेजी जिनमें हुज़ैफ़ा बिन यमान भी थे। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो यरमूक की ख़बर के इंतिज़ार में कई दिन से सोए नहीं थे। फ़तह की ख़बर पहुंची तो दफ़अतन सज्दे में गिरे और ख़ुदा का शुक्र अदा किया। (उद्धरित अल् फ़ारूक अज़ शिब्ली नुमानी, पृष्ठ 119 से 130 दारुल इशात कराची 1991

ई.) (अल् इकतेफा बेमा तज़मेना मिन मग़ाज़ी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम वस्सलासता खुल्फ़ा, भाग 2 पृष्ठ 271 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 1420)(फ़ुतूह अल्-शामि वाकदी, भाग 1 पृष्ठ 242 अल् मक्तबत्ल तोफ़ीकियाँ मिस्र 2008 ई.)(तारीख़ अल् तिब्री लेइब्ने जरीर भाग 2, पृष्ठ 338 दारुल क़ुतुब अल् इल्मिया बेरूत 1987 ई.)(तारीख़ इस्लाम की बहादुर ख़वातीन, पृष्ठ 116 अज़ मौलाना सनाउल्लाह साद शुजा आबादी, मकतबा उमर फ़ारूक़ कराची 2011 ई.) (अल् बदाय वन्नहाया, भाग 9 पृष्ठ 560 दारे हिज्र 1998 ई.)

यरमूक के लिए हिम्ज़ से इस्लामी फ़ौज को अस्थाई तौर पर जाना पड़ा था इस पर उन लोगों से लिया गया टैक्स उन्हें वापस कर दिया गया था। इस का वर्णन करते हुए हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो ने यह बयान किया है कि "साहाब रज़ियल्लाहु अन्हो ने जिस वक़्त रूमी हुकूमत के साथ मुक़ाबला किया और बढ़ते-बढ़ते यूरोशलम पर जो ईसाइयों की मज़हबी जगह है क़ाबिज़ हो गए और फिर इस से भी आगे बढ़ना शुरू हुए तो ईसाइयों ने यह देखकर कि उनका मज़हबी मर्कज़ मुस्लमानों के हाथ आ गया है उनको वहां से निकालने के लिए आख़िरी कोशिश का इरादा किया और चारों तरफ़ मज़हबी जिहाद का ऐलान कर के ईसाइयों में एक जोश पैदा कर दिया गया। और बड़ी भारी फ़ौजें जमा कर के इस्लामी लश्कर पर हमले की तैयारी की। उनके इस शदीद हमला को देख कर मुस्लमानों ने जो उन के मुक़ाबला में निहायत क़लील संख्यां में थे अस्थाई तौर पर पीछे हटने का निर्णय किया और इस्लामी सिपहसालार ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो को लिखा कि दुश्मन इतनी कसीर संख्यां में है और हमारी संख्यां इतनी थोड़ी है कि इस का मुक़ाबला करना इस लश्कर को तबाह करने के बराबर है। इस लिए आप अगर आज्ञा दें तो जंगी सफ़ बंदी को सीधा करने और जंग को छोटा करने के लिए इस्लामी लश्कर पीछे हट जाए ताकि समस्त जमईयत को एकत्र कर के मुक़ाबला किया जा सके और साथ ही यह भी लिखा कि हमने इन क्षेत्रों से जो फ़तह कर रखे हैं लोगों से टैक्स भी वसूल किया हुआ है। अगर आप इन क्षेत्रों को छोड़ने की आज्ञा दें तो ये बताएं कि इस टैक्स के सम्बन्ध में क्या आदेश है? हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने उत्तर दिया कि युद्ध को छोटा करने और इस्लामी ताक़त को एक साथ करने के लिए पीछे हटना इस्लामी तालीम के ख़िलाफ़ नहीं लेकिन यह याद रखो कि इन क्षेत्रों के लोगों से टैक्स इस शर्त पर वसूल किया गया था कि इस्लामी लश्कर उनकी हिफ़ाज़त करेगा और जब इस्लामी लश्कर पीछे हटेगा तो उस के यह अर्थ होंगे कि वह इन क्षेत्रों की हिफ़ाज़त नहीं कर सकेगा। इस लिए ज़रूरी है कि जिससे जो कुछ वसूल किया गया है वह उसे वापस कर दिया जाए। जब हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो का यह हुक्म पहुंचा तो इस्लामी सिपहसालार ने इन क्षेत्रों के ज़मीन-दारों और ताजिरों और दूसरे लोगों को बुला बुला कर उनसे वसूल शूदा रक़ूम वापस कर दीं और उनसे कहा कि आप लोगों से यह रक़ूम इस शर्त पर वसूल की गई थीं कि इस्लामी लश्कर आप लोगों की हिफ़ाज़त करेगा परन्तु अब जबकि हम दुश्मन के मुक़ाबला में अपने आपको कमज़ोर पाते हैं और कुछ देर के लिए अस्थाई तौर पर पीछे हट रहे हैं और इस वजह से आप लोगों की हिफ़ाज़त नहीं कर सकते। इन रक़ूम को अपने पास रखना दरुस्त नहीं।

यह ऐसा उदाहरण था कि जो दुनिया की तारीख़ में और किसी बादशाहत ने नहीं दिखाया। बादशाह जब किसी इलाक़े से हटते हैं तो बजाय वसूल करदा टैक्स इत्यादि वापस करने के इन क्षेत्रों को और भी लोटते हैं। वे समझते हैं कि अब तो ये इलाक़े दूसरे के हाथ में जाने वाले हैं हम यहां से जितना फ़ायदा उठा सकते हैं उठा लें। फिर चूँकि उन्होंने वहां रहना नहीं होता इसलिए बदनामी का भी कोई ख़ौफ़ उनको नहीं होता और अगर कोई आला दर्जा की मुनज़्ज़म हुकूमत हो तो वे ज़्यादा से ज़्यादा यह करते है कि ख़ामोशी से फ़ौजों को पीछे हटा देते है और ज़्यादा लूट मार नहीं करने देती लेकिन इस्लामी लश्कर ने जो आचरण दिखाया जब से दुनिया पैदा हुई है केवल हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के ज़माना में ही नज़र आता है। बल्कि अफ़सोस है कि बाद के ज़माना को भी अगर शामिल कर लिया जाए तो इस की कोई और मिसाल दुनिया में नहीं मिलती कि किसी विजय ने कोई इलाक़ा छोड़ा हो तो इस इलाक़ा के लोगों से वसूल करदा टैक्स और माल वापस कर दिए हों। इस का ईसाइयों पर इतना असर हुआ कि अतिरिक्त इसके उनके हम मज़हब फ़ौजें आगे बढ़ रही थीं, हमला-आवर उनकी अपनी क़ौम के जरनैलों, करनैलों और अफ़सरों पर मुश्तमिल थे और सिपाही उनके भाई बंधू थे और बावजूद इस के कि इस जंग को ईसाइयों के लिए मज़हबी जंग बना दिया गया था और बावजूद इस के कि ईसाइयों का मज़हबी मर्कज़ जो उनके क़बज़े से निकल कर मुस्लमानों के हाथ में जा चुका था अब उस की आज़ादी के ख़ाब देखे जा रहे थे। ईसाई मर्द और महिलाएं घरों से बाहर निकल निकल कर रोती और दुआएं करते थे कि मुस्लमान फिर वापस आएं।" (ख़ुतबात-ए- महमूद, भाग 24 पृष्ठ 15 से 17)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो को तारीख़ पर बड़ा उबूर था। उनका यही ख़्याल है कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो से पूछ के ही वापसी हुई थी और फिर यह टैक्स इत्यादि जो था वह वापस किया गया था।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो हज़रत अकर्मा रज़ियल्लाहु अन्हो के बारे में फ़रमाते हैं कि "हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के ज़माना में यरमूक की जंग में जब रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साहाब रज़ियल्लाहु अन्हो की जानें ख़तरा में थीं और मुस्लमान कसरत से मारे जा रहे थे तो इस्लामी कमांडर इन चीफ़ हज़रत अबू उबेदा बिन अल जर्राह रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा कि मैं चाहता हूँ कि कुछ ऐसे बहादुर निकल आएं जो संख्यां में जबकि थोड़े हूँ लेकिन वे सिर धड़ की बाज़ी लगा कर रूमी फ़ौज पर रोब डाल दें। हज़रत अकर्मा रज़ियल्लाहु अन्हो आगे निकले और उन्होंने हज़रत अबू उबैदा रज़ियल्लाहु अन्हो से निवेदन की कि मुझे अपनी मर्ज़ी के अनुसार कुछ आदमी चुन लेने दें मैं इन व्यक्तियों को साथ लेकर दुश्मन के बीच लश्कर पर हमला करूँगा और कोशिश करूँगा कि उनके जरनैल को मार दूं। उस वक़्त रूमी लश्कर का जरनैल ख़ूब ज़ोर से लड़ रहा था और बादशाह ने उस से वादा किया था कि अगर वह मुस्लमानों के मुक़ाबला में फ़तह हासिल कर ले तो वह अपनी लड़की की शादी उस से कर देगा और अपनी आधी बादशाहत उस के सपुर्द कर देगा। इस लालच की वजह से वह बड़े जोश में था और अपनी ज़ाती और शाही फ़ौज लेकर मैदान में उतरा हुआ था और उसने सिपाहियों से बड़ी रक़ूम का वादा किया हुआ था। इस लिए रूमी सिपाही भी जान तोड़ कर लड़ रहे थे। जब रूमी लश्कर ने मुस्लमानों पर हमला किया तो वह जरनैल लश्कर के बीच में खड़ा था।

हज़रत अकर्मा रज़ियल्लाहु अन्हो ने क़रीबन चार सौ व्यक्तियों को लेकर लश्कर के बीच में हमला किया और उनके साथियों में से एक व्यक्ति ने इस जरनैल पर हमला कर के उसे नीचे गिरा दिया। मुक़ाबला में लाखों का लश्कर था और यह केवल चार-सौ मुस्लमान थे। इसलिए मुक़ाबला आसान नहीं था। इस जरनैल को तो उन्होंने मार दिया और इस के मर जाने की वजह से लश्कर भी तित्र बित्तर हो गया परन्तु दुश्मन उन व्यक्तियों पर टूट पड़ा और सिवाए चंद एक के सारे के सारे शहीद हो गए। इन व्यक्तियों में से बारह शदीद ज़ख़मी थे। जब मुस्लमान लश्कर को फ़तह हुई तो उन लोगों की तलाश शुरू हुई। इन बारे ज़ख़मियों में हज़रत अकर्मा रज़ियल्लाहु अन्हो भी शामिल थे। एक मुस्लमान सिपाही आपके पास आया। आपकी हालत ख़राब थी। उसने कहा अकर्मा मेरे पास पानी की छागल है तुम कुछ पानी पी लो। आपने मुँह फेर कर देखा तो पास ही हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हो के बेटे फ़ज़ल रज़ियल्लाहु अन्हो पड़े हुए थे। वह भी बहुत ज़ख़मी थे। अकर्मा रज़ियल्लाहु अन्हो कहने लगे मेरी ग़ैरत यह बर्दाश्त नहीं कर सकती कि जिन लोगों ने रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की इस वक़्त सहायता की जब मैं आपका शदीद मुख़ालिफ़ था वे और उनकी औलाद तो प्यास की वजह से मर जाए और मैं पानी पी कर ज़िंदा रहूं। पहले उन्हें पानी पिलाओं। अगर कुछ बच जाए तो फिर मेरे पास ले आना। इस लिए वह मुस्लमान फ़ज़ल रज़ियल्लाहु अन्हो के पास गया। उन्होंने अगले ज़ख़मी की तरफ़ इशारा किया और कहा पहले उन्हें पिलाओं वह मुझसे ज़्यादा मुस्तहिक़ है। वह उस ज़ख़मी के पास गया तो उसने अगले ज़ख़मी की तरफ़ इशारा कर के कहा कि वह मुझसे ज़्यादा मुस्तहिक़ है, पहले उसे पिलाओं। इस तरह वह जिस सिपाही के पास जाता वह उसे दूसरे की तरफ़ भेज देता और कोई पानी नहीं पीता। जब वह आख़िरी ज़ख़मी के पास पहुंचा तो वह फ़ौत हो चुका था। जब अकर्मा रज़ियल्लाहु अन्हो की तरफ़ लौटा तो वह भी दम तोड़ चुके थे। इस तरह बाक़ी ज़ख़मियों का हाल हुआ। जिसके पास भी वह गया वह फ़ौत हो गया था।''

(हर अहमदी औरत अहमदियत की सदाक़त का एक ज़िंदा निशान है, अनवारुल उलूम, भाग 26 पृष्ठ 229-231)

तो यह था इस जंग का अंजाम। अल्लाह तआला ने इस तरह फिर फ़तह दी। बहरहाल अभी यह वर्णन चल रहा है। आइन्दा भी इंशा अल्लाह बयान होगा।

☆ ☆ ☆ ☆

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ की यूरोप की यात्रा, मई जून 2015 ई (भाग-22)

भाषण सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ स्थान उद्घाटन समारोह मस्जिद बैयतुल उल-क़ादिर

(रिपोर्ट: अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)
(अनुवादक: सय्यद मुहयुद्दीन फ़रीद)

ग़ैर मुस्लिम जर्मन मेहमानों के ऐडरैस

अमीर साहब जर्मनी के ऐडरैस के बाद डिप्टी मेयर CLAUS DALINGHAUS ने अपना ऐडरैस प्रस्तुत करते हुए कहा :

सम्माननीय ख़लीफतुल मसीह! मैं आपका शुक्रिया अदा करता हूँ कि मुझे यहां बुलाया गया। मैं इस बात का भी शुक्रगुज़ार हूँ शहर vechta का वर्णन बड़े सुन्दर ढंग में किया गया है। मस्जिद का उद्घाटन आपके लिए भी और हमारे लिए भी अत्यधिक ख़ुसूसियत का हामिल है और मैं इस अवसर पर शहर की इंतिज़ामिया की ओर से मुबारकबाद का संदेश देता हूँ।

अहमदिया मुस्लिम जमाअत vechta के लिए यह मस्जिद विशेष एहमीयत की हामिल है। यह न केवल मिलने की जगह है बल्कि इस बात का भी symbol है कि इस्लाम इसी तरह इस सोसाइटी का हिस्सा है जिस तरह दूसरे धर्मों इस शहर का हिस्सा हैं।

उन्हों ने कहा कि यहां अहमदिया मस्जिद बनने से अब vechta शहर जमाअत का वतन बन गया है। और जब एक जगह इन्सान का वतन हो तो वह वहां integrate भी होता है और इस से मुराद यह है कि सबको स्वीकार कर के मिल-जुल कर रहा जाए और किसी से नफ़रत का प्रकटन न किया जाए।

उन्हों ने कहा कि जमाअत अहमदिया की यह ख़ूबी है कि वह वास्तव में अमल कर के भी दिखाती है और सबसे प्यार-ओ-मुहब्बत से प्रस्तुत आती है।

उन्हों ने कहा कि सम्माननीय ख़लीफतुल मसीह ख़ैरीयत से वापस जाएं और फिर ज़रूर पुन: भी यहां हमारे पास तशरीफ़ लाएं। अब मैं अंत में ख़लीफ़तुल मसीह को एक सम्मान प्रस्तुत करना चाहता हूँ। इस लिए मेयर ने शहर vechta के हवाला से एक स्मारिका प्रस्तुत की।

मेयर के ऐडरैस के बाद ज़िला मेंबर पार्लियामेंट Mr Stephan Siemer ने अपना ऐडरैस प्रस्तुत किया :

उन्हों ने अपना ऐडरैस प्रस्तुत करते हुए कहा कि सम्माननीय ख़लीफतुल मसीह! मैं सबसे पहले आपका शुक्रिया अदा करना चाहता हूँ कि मस्जिद के उद्घाटन के लिए दावत दी है। मैं ज़िला असैंबली का मेंबर हूँ और जमाअती प्रोग्रामों में शामिल होता रहता आज vechta में आप के कामों, आपकी मेहनत का फल मस्जिद के बनने की सूरत में आप को मिल रहा है। अब आप अपने धर्म के अनुसार अपनी इबादत इस मस्जिद में कर सकेंगे।

उन्हों ने कहा आपने अपने दावतनामें में अमन, सलामती, वुसअते हौसला बातचीत, डायलॉग और इन्सानियत की सहायता और सेवा की भवना प्रस्तुत की है। मैं इस हवाला से कहना चाहता हूँ कि इस क्षेत्र में विभिन्न धर्मों आबाद हैं । प्रोटैस्टैंट, कैथोलिक बड़ी संख्या में आबाद हैं। आजकल विभिन्न धर्मों में बड़े मसाल पाए जाते हैं । इसी तरह जो धर्मों एक दूसरे के क़रीब हों उनमें मसाइल पैदा हो जाते हैं।

एक दूसरे के साथ मिल-जुल कर रहना बहुत ज़रूरी है। सब धर्मों वाले अपने अपने तरीक़ के अनुसार रहें और एक दूसरे के साथ मुहब्बत से व्यवहार करें।

हमें प्रयास करना चाहिए कि वह ज़माना पुन: नहीं आए जिसमें फिर से लड़ाईयां हों क्योंकि जर्मनी में ऐसा ज़माना रहा है कि यहां लड़ाईयां होती रहीं। अंत में उन्हों ने एक-बार फिर आज की दावत और इस समारोह में शामिल होने पर शुक्रिया किया।

भाषण हुज़ूर अनवर स्थान
उद्घाटन समारोह मस्जिद बैयतुल उल-क़ादिर

मेंबर पार्लियामेंट के इस ऐडरैस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने सात बजकर दस मिनट पर इस समारोह से भाषण फ़रमाया :

तशह्हुद और ताव्वुज़ और तसमिया के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया :

समस्त आदरणीय मेहमानों को अस्सलामो अलैकुम व रहमतुल्लाही व बरकातहू

पहले तो मैं आए हुए सब मेहमानों का शुक्रिया अदा करना चाहता हूँ कि आप लोग हमारे इस फंक्शन में आए जो विशेषता धर्म से सम्बन्ध रखने वाली एक जमाअत का धार्मिक फंक्शन है और इस की इबादत-गाह का उद्घाटन है। और यह बात निश्चित आप के खुले दिल और दिमाग की निशानदेही करती है और इस का प्रकटन करती है। इसके अतिरिक्त यह कि आप अहमदी नहीं हैं फिर भी आप इस फंक्शन में आए और न केवल इस फंक्शन में आए बल्कि आपके इस प्रकटन से और भी ज़्यादा मेरे शुक्रगुज़ारी की भावनाए उभरती हैं कि आपको इंतिज़ामिया ने साढ़े पाँच बजे का समय दिया था परन्तु मेरी यात्रा के कारण से आपको इंतिज़ार करना पड़ा। हमने एक लम्बी यात्रा की और फिर रास्ते में एक दूसरे शहर में जो कि यहां से अढ़ाई सौ किलो मीटर दूर है, एक मस्जिद की नीव का पत्थर रखा। वहां समारोह हुआ और फिर वहां से चले। तो स्पष्ट है जब यात्रा लम्बी हो और रास्ते में कुछ ट्रैफ़िक की रोकें भी हाइल हो जाएं और फंक्शन भी हों तो देर हो जाती है। इस लिए मैं पहले तो आप सबसे क्षमा मांगना चाहता हूँ कि इस के अतिरिक्त आपने डेढ़ घंटा इंतिज़ार किया और यह बहुत बड़ी है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया :

और मेरी यह शुक्रगुज़ारी इस लिए भी है कि में उस नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को मानने वाला हूँ जिन्होंने फ़रमाया कि जो बंदों का शुक्र अदा नहीं करता वह कभी ख़ुदा तआला का भी शुक्र अदा नहीं कर सकता। मानो कि यह शुक्रगुज़ारी भी मेरी इबादत का हिस्सा है। मुझे मस्जिद जा कर नमाज़ पढ़ने से कोई लाभ नहीं होगा यदि मैं आप लोगों की नेक भावनाओं और एहसासात का ख्याल न करूँ और आपका शुक्रगुज़ार न बन्नूँ। तो सबसे पहले मैं आपका शुक्रगुज़ार हूँ कि आप यहां बैठे रहे, क्षमा चाहता भी हूँ कि आप लोगों को लंबा इंतिज़ार करना पड़ा।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया :

हमारे निकट मस्जिद ख़ुदा तआला का घर है और प्रत्येक इबादत की जगह ख़ुदा तआला का घर होती है। इसी लिए जब मक्का के कुफ़्फ़ार ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हिज्रत के बाद मदीना जाने के बाद आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लमपर हमला किया और उस समय मुस्लमानों के पास कोई जंगी साज़-ओ-सामान नहीं था। उस समय मुस्लमानों को आदेश हुआ कि बहुत सब्र कर लिया, तेराह वर्ष तक सब्र किया है, अब दुश्मनों के हाथ रोकने होंगे और सख़्ती से उत्तर देना होगा। परन्तु सख़्ती क्या केवल मुस्लमानों को बचाने के लिए? नहीं। फ़रमाया : सख़्ती इस लिए करो कि यदि आज उन पर सख़्ती नहीं की गई तो ये धर्म के मुख़ालिफ़ लोग जो ख़ुदा के घरों को आबाद नहीं देखना चाहते, जो यह नहीं चाहते कि लोग किसी धर्म के साथ सम्बन्ध रखें और अपनी इबादत-गाहों को आबाद करें, ये उनको ख़त्म कर देंगे। इस लिए क़ुरआन-ए-करीम में बड़ा स्पष्ट लिखा हुआ है कि यदि उनके हाथ नहीं रोकोगे तो न कोई चर्च बाक़ी रहेगा, न कोई सीनागॉग बाक़ी रहेगा, न कोई और इबादत खाना बाक़ी रहेगा, न मस्जिद बाक़ी रहेगी। मानो कि मुस्लमानों ने केवल मस्जिद का दिफ़ा नहीं करना बल्कि प्रत्येक इबादत-गाह का दिफ़ा करना है। चर्च पवित्रता को भी क़ायम रखना है, सेनागाग की भी हिफ़ाज़त करनी है दूसरे temples और इबादत-गाहों को भी क़ायम रखना है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: तो यह वह शिक्षा है जो मस्जिद बनाने के साथ हमारे लिए एक लाहे अमल है। अत: इस बात को सामने रखते हुए हम मस्जिदें बनाते हैं और इस बात को सामने रखते हुए हम न केवल समस्त धर्मों के मानने वालों की इज़्ज़त और सत्कार करते हैं, उनके संस्थापकों की इज़्ज़त और सत्कार करते हैं बल्कि यह समझते हैं कि इस के बिना हमारी इबादत मुकम्मल ही नहीं हो सकती। और फिर यह भी कि न केवल सत्कार है बल्कि यदि हमें किसी भी दूसरे धर्म के लोग अपनी इबादत के घरों की हिफ़ाज़त के लिए बुलाऐं तो इसके लिए भी जमाअत अहमदिया मुस्लिमा हर वक़त जाने के लिए तैयार है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : अल्लाह तआला ने हमें यही आदेश दिया है कि इबादत करो। और क़ुरआन-ए-करीम में बेशुमार जगह यह आदेश दिया कि तक़्वा इख़तियार करो और तक़्वा क्या है? यही कि ख़ुदा तआला को मानते हुए जहां तुम उस की इबादत करो वहां बंदों के हुक़ूक़ भी अदा करो। तकब्बुर और द्वेष को दूर करो। आजिज़ी इख़तियार करो और आजिज़ी से अपने इन्सानों की, अपने भाईयोंकी, अपने हम क़ौमों की बल्कि समस्त दुनिया के इन्सानों की सेवा करो। अत: यह वह चीज़ है जो हमें अर्थात मस्जिदों में आने वालों को अपनाने का आदेश है। तो यदि यह होगा तो तभी ख़ुदा तआला की रज़ा भी प्राप्त होगी। और तभी इबादत के हक़ भी अदा होंगे।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : मेरे सामने अधिकतर उनकी बैठी है जो अहमदी नहीं हैं। बल्कि जो शक्लें मेरे सामने हैं उनमें शायद अहमदी 1/10 हिस्सा हों। बाहर ज़रूर होंगे जो मेरी बातें सुन रहे होंगे परन्तु मेरे सामने अधिकता स्थानीय लोगों की है। यह इस बात का सबूत है कि अहमदियों के यहां अच्छे संबंध हैं और इन शा अल्लाह तआला इस मस्जिद के बनने के बाद जिसका उद्देश्य ही इन संबंध को बड़े करना है और इन्सानियत की क़दरों को क़ायम करना है आशा है इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए यहां के अहमदी मज़ीद प्रयास करेंगे।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : जमाअत अहमदिया के संस्थापक जिन को हम मसीह मौऊद और महदी माहूद मानते हैं ने फ़रमाया कि मैं दो उद्देश्य लेकर आया हूँ। यदि मेरे मानने वाले इन दो उद्देश्य को पूरा नहीं करते तो तुम मेरी जमाअत में शामिल नहीं हो। तुम्हें अहमदी मुस्लमान कहलाने का कोई लाभ नहीं। तुम फिर इसी तरह संप्रदायवादी हो जिस तरह दूसरे गिरोह हमें नज़र आते हैं। और वह दो उद्देश्य ये हैं।

आप अलैहिस्सलातो वस्सलाम ने फ़रमाया कि एक तो मैं यह उद्देश्य लेकर आया हूँ कि इन्सान को उसके पैदा करने वाले के क़रीब करूँ और उस की सही इबादत करने वाला बनाऊं और दूसरा उद्देश्य यह कि इन्सानों को एक दूसरे के हुक़ूक़ अदा करने की ओर ध्यान दिलाऊं। अत: ये दो बड़े उद्देश्य हैं जिसके लिए जमाअत अहमदिया क़ायम की गई है और ये वह उद्देश्य हैं जिनको पूरा करने के लिए जमाअत अहमदिया संसार के प्रत्येक शहर में हर कोने में प्रयास कर रही है और इसी लिए हमारी मस्जिदें भी बनाई जाती हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : यही कारण है कि अफ़्रीक़ा और दूसरे ग़रीब मुल्कों में हम इन्सानियत की सेवा कर रहे हैं। केवल धार्मिक जमाअत होने का हक़ अदा नहीं कर रहे। केवल अपनी इबादतों की ओर ध्यान नहीं दे रहे बल्कि अल्लाह तआला के फ़ज़ल से हमारे स्कूल भी चल रहे हैं और बिना किसी भेद भाव के स्कूलों में ग़रीब बच्चों को शिक्षा दी जार ही है। बल्कि कुछ देशों में हमारे बहुत से स्कूल ऐसे हैं जिनमें अहमदी तो क्या मुस्लमान भी नहीं हैं। ईसाई और नास्तिक लोग शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं और बिना किसी भेद भाव के हम उन्हें शिक्षा देने का प्रयास कर रहे हैं। इन में प्राइमरी स्कूल भी हैं, सैकण्डरी स्कूल भी हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल ने फ़रमाया : इसके अतिरिक्त हमारे बहुत से हस्पताल और हैल्थ कैअर सैंटर भी हैं जो इन्सानियत की सेवा कर रहे हैं। इसी तरह बिना किसी भेद भाव के अफ़्रीक़ा के दूर दूर के देशों में हम पानी प्रदान कर के नेकी का प्रयास कर रहे हैं। यहां रहने वाले लोगों को अतिरिक्त इस के कि आपके होटलों में जाओ तो वाश रूमज़ में लिखा होता है कि पानी कम प्रयोग करो। पानी क़ीमती चीज़ है परन्तु इस के अतिरिक्त पानी ज़ाए किया जाता है। आपके घरों में आप लोगों को एहसास नहीं होता। आप टेप खोलते हैं तो पानी हाज़िर हो जाता है परन्तु अफ़्रीक़ा में मैं ने आठ वर्ष गुज़ारे हैं और मुझे पता है कि वहां के लोग पानी के लिए किस तरह तरसते हैं। वह बच्चे जो आपके बच्चे हैं जिन के लिए आप सात आठ वर्ष की आयु में इस फ़िक्र में होते हैं कि उन्हें अच्छी ख़ुराक दें, उनकी अच्छा पोषण करें, उनको अच्छी शिक्षा दिलाएं। वे बच्चे सिरों पर बालटियां रखकर दो दो तीन तीन किलोमीटर जाते हैं और वहां गंदे pond से अपने घरों के लिए बारिश का पानी लेकर आते हैं। तो ऐसे हालात में जमाअत अहमदिया यह भी प्रयास कर रही है कि लोगों को उनके घरों के पास पीने वाला पानी प्रदान किया जाए। और फिर वह पानी जो वह बाल्टियों में लेकर आते हैं वे भी ऐसा है कि जिसको देखकर आप शायद उस में हाथ डालना भी पसंद न करें कि इतना गंदा पानी होताहै। परन्तु वह मजबूर हैं और वही पानी पीते हैं। परन्तु जमाअत अहमदिया ने पानी प्रदान करने के लिए बहुत सारे प्रोजेक्ट्स शुरू किए हैं और पंप भी लगा रहे हैं और बहुत सारे जो UN ने लगाए और ख़राब हो गए और उनका पूछने वाला कोई नहीं था उनको Rehabilitate भी किया ताकि लोगों के घरों में साफ़ पीने का पानी प्रदान हो जाए। और अब जब ये पंप लगते हैं और वहां से साफ़ पानी निकलता है तो वहां के लोगों की, महिलाओं और बच्चों की जो चेहरे की ख़ुशी होती है वह देखने वाली होती है कि किस तरह अल्लाह तआला ने उनको साफ़ पानी प्रदान कर दिया और वह चार चार किलोमीटर दूर यात्रा कर के एक बाल्टी पानी की उठाने से बच गए। अत: यह काम हैं जो जमाअत अहमदिया इन्सानियत की सेवा के लिए कर रही है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया फिर इसी तरह जमाअत अहमदिया मॉडल वेलेज् प्रोजेक्ट भी चला रही है जिस में वहां के लोगों को स्ट्रीट लाइट्स प्रदान की जाती हैं, कम्यूनिटी हाल बनाया जाता है और ग्रीन हाऊस बना कर उनको थोड़ी सी स्थानीय तौर पर वेजीटेबल इत्यादि उगाने के लिए अवसर प्रदान किया जाता है। इसी तरह पानी के प्रोजेक्ट भी इस में शामिल हैं। और यह किसी विशेष जगह पर नहीं हो रहा बल्कि प्रत्येक जगह किसी भी धर्म से सम्बन्ध रखने वाला व्यक्ति हो उसके लिए ये प्रोजेक्ट चल रहे हैं। अत: इन्सानियत की सेवा एक बहुत बड़ा काम है जो जमाअत अहमदिया कर रही है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया बहुत से चर्चिज़ भी हैं जो यह काम करते हैं और बड़े बड़े पैमाने पर भी करते हैं परन्तु जमाअत अहमदिया की ख़ुसूसियत यह है कि जिस तरह आपने यहां देखा कि यह मस्जिद बनाई तो वालंटेयरज़ ने बनाई और बहुत सा काम उन्होंने स्वयं अपने हाथों से किया। हमारे यूरोप से और दूसरे मुल्कों से पढ़े लिखे इंजीनियर्ज़, डाक्टरज़ और दूसरे लोग volunteer के तौर पर अपने ख़र्च पर जाते हैं और जो यहां कारों में बैठ कर यात्रा करने वाले हैं, शहरों में रहने वाले और यूरोप में रहने वाले हैं जिन को आटोबाण के बिना एक शहर से दूसरे शहर जाने की शायद कल्पना भी न की हो या जहां पक्की सड़कों के बिना जा नहीं सकते हों वह वहां जा कर कच्चे रास्तों पर कभी कबार मोटर साईकलों पर बैठ कर और कभी कबार साईकलों पर बैठ कर जाते हैं और सेवा करते हैं। कोई चार हफ़्तों के लिए अपने आप को प्रस्तुत करता है कोई आठ हफ़्तों के लिए। यह इन्सानियत की सेवा ख़ुदा तआला के फ़ज़ल-ओ-करम से जमाअत अहमदिया कर रहीं है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया अत: यह काम जमाअत अहमदिया का है और यही वह काम है जिस के लिए जमाअत अहमदिया संसार में हर जगह संदेश देती है और मुझे आशा है कि यही बातें आप लोगों को पता लगी होंगी और उनके प्रकटन अहमदियों से हुए होंगे तभी आपके अहमदियों से एक संबंध हैं कि मुझे यहां आज बेशुमार स्थानीय लोग नज़र आ रहे हैं, जिनका धार्मिक दृष्टि से जमाअत अहमदिया से कोई सम्बन्ध नहीं और इस के अतिरिक्त हमारे एक धार्मिक फंक्शन में शामिल हो रहे हैं। अल्लाह तआला आपको इस का प्रतिफल दे।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : एक बात हमारे अमीर साहब ने यहां की कि यह शहर इस दृष्टि से भी प्रसिद्ध है कि यहां बच्चों का जन्म ज़्यादा होती है, या हुआ करता था। और आगे जो फ़िक़रा अनुवाद करने वाले ने अनुवाद किया था वह यह था कि यही काम जमाअत अहमदिया करती है। तो मुझे पता नहीं कि इस से उन की क्या मुराद है परन्तु यदि उनकी मुराद यह थी कि बच्चे पैदा करने का काम जमाअत अहमदिया करती है तो यह बड़ी अच्छी बात है। अल्लाह तआला जमाअत के लोग को ज़्यादा से ज़्यादा बच्चे प्रदान फ़रमाए ताकि फिर सही रंग में उनकी शिक्षा करके उनकी तर्बीयत करके इस शहर

हदीस नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और अगर खड़े होकर संभव न होतो बैठ कर और अगर बैठ कर भी संभव न हो तो पहलु के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

के लिए मज़ीद आचरण क़ायम कर सकें। अत: आइन्दा नसलों में नेकियों को जारी रखना भी बड़ी बात है, जिसकी ओर जमाअत अहमदिया बहुत ध्यान देती है और ध्यान देना चाहिए।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : हमारे नैशनल अमीर साहब ने मस्जिद की खूबियां वर्णन करते हुए एक बात यह भी कही कि यह मस्जिद पत्थर से बनाई गई है। एक तो पत्थर की ज़ाहिरी सुन्दरता है परन्तु पत्थर की बुरी मिसालें भी हैं। हमारे यहां एक उदाहरण है कि जो आदमी दूसरों की भावनाओं का ख्याल नहीं रखता हो, जो दूसरों के एहसासात का ख्याल नहीं रखता हो, जो दूसरे की बात समझने का प्रयास नहीं करता हो वह पत्थर-दिल होता है। परन्तु क़ुरआन-ए-करीम ने हमें एक और उदाहरण भी दिया है कि कुछ लोग तो पत्थर-दिल होते हैं, कुछ नहीं होते और कुछ पत्थर से भी ज़्यादा सख़्त दिल होते हैं। बल्कि पत्थरों में से भी कुछ ऐसे हैं जिन से पानी के चश्मे फूट रहे होते हैं। तो आशा है कि जमाअत अहमदिया के वे लोग जो इस मस्जिद में इबादत करने आयेंगे तो पत्थर से बनी हुई मस्जिद देखकर उनके दिल पत्थर की तरह सख़्त नहीं हो जाएंगे बल्कि उन पत्थरों की तरह होंगे, जिन में से पानी के चश्मे फूटते हैं। और प्रत्येक अहमदी का जो यहां इबादत करने के लिए आएगा दिल ऐसा हो जाएगा जिस में से दूसरों के लिए मुहब्बत और प्यार के चश्मे फूटेंगे और यही हमारा उद्देश्य है कि इसी तरह संसार में मुहब्बत और प्यार को फैलाया जाए। तभी हम अपने उन नारों पर अनुकरण करने वाले होंगे कि "मुहब्बत सब के लिए नफ़रत किसी नहीं" अत: यह जमाअत अहमदिया की बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी है और मैं आशा करता हूँ कि ये अहमदी इस ज़िम्मेदारी को अदा करने का प्रयास करेंगे और आप शहरियों से भी यही कहूँगा कि यदि आप देखें कि यह कर्तव्य अदा नहीं हो रहा तो मुझे बताएं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : दूसरे नायब मेयर साहब ने यहां मस्जिद की विशेषताओं का वर्णन किया और अपने भावनाओं का प्रकटन किया। उनका भी शुक्रिया अदा करता हूँ। इस्लाम के बारेमें जो आशाएं उन्हों ने वर्णन कीं या जो उनका विचार था कि यह इस्लाम की हक़ीक़ी आत्मा है, इन शा अल्लाह इस मस्जिद के बनने के बाद इस से बढ़ कर अहमदी मुस्लमानों के आचरण से और उनके प्रत्येक अनुकरण से इसका प्रकटन होगा।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया इंटिग्रेशन की बात हो रही है तो मेरी नज़र में इंटिग्रेशन केवल ज़ाहिरी मेल-जोल नहीं बल्कि हक़ीक़ी इंटिग्रेशन उस समय होती है जब यहां आकर आबाद होने वाले अहमदी जो दूसरे मुल्कों से आए हुए हैं और यहां आकर उनको जर्मनी की शहरीयत मिल गई है और यहां आकर उनको वह समस्त लाभ प्राप्त हैं जो एक जर्मन शहरी को प्राप्त हैं और उनके बच्चे उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं, तो असल इंटिग्रेशन यह है कि अब इस मुल्क से कामिल वफ़ादारी उनके ईमान का हिस्सा हो। यदि मुकम्मल ईमानदारी नहीं दिखाते, देश की प्रगति में हिस्सा नहीं लेते, यहां के समाज की बेहतरी के लिए अपनी सोचों को, अपनी अक़्लों को और अपनी समस्त सलाहियतों को प्रयोग नहीं करते तो इस का अर्थ यह है कि ये सही तरह इंटगरेट नहीं हो रहे और न अपने ईमान का सही हक़ अदा कर रहे हैं। क्योंकि यह भी हमें हमारे नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि तुम्हारी वतन से मुहब्बत तुम्हारे ईमान का हिस्सा है। अत: मेरा विचार है कि इन सब का प्रकटन अहमदियों की ओर से होता है तभी ये नज़्ज़ारे नज़र आ रहे हैं। और इन शा अल्लाह आइन्दा पहले से बढ़कर नज़र आएँगे।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : उनकी एक बात मुझे बहुत अच्छी लगी कि हमें एक दूसरे की भावनाओं का एहसास करना चाहिए। अब यही बात रास्ते में जहां मस्जिद का नींव का पत्थर रख कर आया हूँ, वहां भी मैंने कही थी कि यदि हम एक दूसरे की भावनाओं का ख्याल रखेंगे, उनका एहसास करेंगे, उनके एहसासात को महसूस करेंगे तभी हम हक़ीक़ी रंग में आपस में मुहब्बत और प्यार से रह सकते हैं और तभी हम एक सुंदर समाज को जन्म दे सकते हैं। और धर्म आता ही इसलिए है कि आपस में मुहब्बत और प्यार पैदा करो। क़ुरआन-ए-करीम कहता हैकि धर्म का मामले तुम्हारे दिल के साथ है। जिस की जो मर्ज़ी है वह धर्म स्वीकार करे परन्तु इन्सानी क़दरों को हमेशा अपने सामने रखों। एक दूसरे के एहसासात और भावनाओं का बहरहाल ख्याल रखो। यदि यह नहीं कर रहे तो तुम अच्छे इन्सान नहीं होर और यदि अच्छे इन्सान नहीं तो फिर तुम अल्लाह तआला की इबादत का भी हक़ अदा नहीं कर सकते। इसी तरह मैं उनके तोहफ़े का भी शुक्रिया अदा करता हूँ जो उन्होंने मुझे दिया।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया फिर एम. पी साहब ने भी कुछ बातें कीं। एक बात उन्हों ने मतभेदों के बारे में की और यहां के मतभेदों की तारीख़ बताई। फिर यह भी बता दिया कि एक ऐसे चर्च में दो विभिन्न फ़िरक़े अपनी इकट्ठी इबादत भी करते हैं। तो यह बहुत बड़ी ख़ूबी है और यही असल चीज़ है जिसका मैं पहले भी वर्णन कर चुका हूँ कि यदि एक दूसरे की भावनाओं और एहसासात का ख्याल रखोगे तो इस वाहिद ख़ुदा की इबादत के लिए जो हमारा पैदा करने वाला है बनाई गई इबादतगा हैं भी एक दूसरे को प्रयोग के लिए दे सकते हो ओर इकट्ठे उनमें इबादत भी कर सकते हैं। तो प्रत्येक धर्म अमन और प्यार की शिक्षा लेकर आया परन्तु इन मज़हबों को बिगाड़ दिया गया। जमाअत अहमदिया के संस्थापक ने यही बात हमें बताई कि धर्म बिगड़ चुके हैं अब उन्हें पुन: प्यार और मुहब्बत की शिक्षा देने के लिए मैं आया हूँ और फिर अपने मानने वालों को कहा कि प्रत्येक वह व्यक्ति जो मुझे मानता है, उस का यह कर्तव्य है कि इस मुहब्बत और प्यार की शिक्षा को और इन्सानी क़दरों को क़ायम करे तभी तुम ख़ुदा तआला की इबादत का हक़ अदा कर सकोगे और मस्जिदें के भी हक़ अदा कर सकोगे।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया आज संसार को अमन की आवश्यकता है। संसार में बहुत बड़ा फ़साद पैदा हो चुका है। यह नहीं कहा जा सकता कि केवल मिडल ईस्ट में फ़साद है या कुछ अरब मुल्कों में फ़साद है। या इस्टर्न यूरोप के मुल्कों में फ़साद है। यह फ़साद थोड़े थोड़े फ़साद ही होते हैं जो बढ़ते बढ़ते संसार को अपनी लपेट में ले लेते हैं। और यही नज़्ज़ारे हमें पुरानी जंगों की तारीख़ में नज़र आते हैं। अत: इस बारे में हम में से हर एक को प्रयास करना चाहिए कि यह फ़साद जो संसार में फैला हुआ है इस को हम रोकें और अमन और प्यार और मुहब्बत और भाई चारे की शिक्षा को भी फैलाए और अपने कर्मों से दूसरे की सहायता करने की प्रयास करें। ताकि जहां हम एक दूसरे को सुरक्षित करने वाले होंगे वहां आइन्दा नसलों को भी सुरक्षित करने वाले होंगे। आइन्दा नसलें यदि हमारी बे एहतियाती की कारण से जंग का शिकार हुईं तो उस के बहुत बुरे परिणाम नसल दर नसल नज़र आएँगे और वह नसलें फिर हमें इल्ज़ाम देंगी। इस लिए हमें आज मुहब्बत और प्यार फैलाने की आवश्यकता है जिस के लिए हमें पहले से बढ़कर प्रयास करन चाहिए। और मेरी दुआ है कि अल्लाह तआला हमें तौफ़ीक़ दे कि हम प्रयास कर सकें।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया अहमदियों को मैं साथ साथ ध्यान दिलाता रहा हूँ, पुन: विशेषता अहमदियों को कहता हूँ कि अब यह मस्जिद बनने के बाद लोगों का ध्यान पहले से बढ़कर आपकी ओर होगी इस लिए पहले से बढ़कर आपस में भी मुहब्बत और प्यार का प्रकटन करें। अल्लाह तआला की इबादत का हक़ भी अदा करें और इस मस्जिद के बनाने के बाद अपने माहौल का हक़ भी अदा करें। ख़िदमत-ए-इन्सानियत भी करें और पहले से बढ़ कर मुहब्बत और प्यार का संदेश इस शहर में भी और अपने पड़ोसियों में भी फैलाते चले जाएं। अल्लाह तआलाआपको इस की तौफ़ीक़ दे आमीन।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल का यह भाषण सात बजकर पैंतीस मिनट तक जारी रहा। अंत में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने दुआ करवाई।

(शेष.....)

☆ ☆ ☆ ☆

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस

ख़िलाफत का निज़ाम भी अल्लाह तआला और उसके रसूल के आदेशों और निज़ाम का हिस्सा है।

(ख़ुत्बा जुम्अ: 24 मई 2019 ई)

तालिबे दुआ

मुहम्मद शुएब सुलेजा पुत्र जनाब मुहम्मद ज़ाहिद सुलेजा मरहूम तथा फैमली, अहमदिया जमाअत कानपुर(उत्तर प्रदेश)

Virtual क्लास

अफ्रीक़ा ने एक दिन दुनिया का मार्गदर्शन करना है

डिसिप्लिन सीखें और जा कर अपनी क़ौम को भी सिखाएँ, आप में यह ख़ूबी अल्लाह तआला की तरफ़ से प्रदान की गई है इसको आर्गेनाईज़ कर लें तो दुनिया का मार्गदर्शन कर सकते हैं

जामिआ अहमदिया इंटरनैशनल घाना की हज़रत अमीरुल मौमेनीन ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से वर्चूअल मुलाक़ात तिथि 5 दिसंबर 2020 ईको हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के साथ जामिआ अहमदिया इंटरनैशनल घाना के विद्यार्थियों और अध्यापकों की वर्चूअल मुलाक़ात हुई। जामिआ अहमदिया इंटरनैशनल घाना के विद्यार्थियों और अध्यापकों की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के साथ इस प्रकार की ये पहली मुलाक़ात थी जो सुबह सवा बारह बजे शुरू हुई। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने विनम्रतापूर्ण इस मुलाक़ात के लिए एक घंटे से अधिक का समय प्रदान फ़रमाया।

प्रोग्राम का प्रारम्भ तिलावत क़ुरआन-ए-करीम से हुआ जो प्रिय हाफ़िज़ उस्मान यबवा (घाना) ने की। प्रिय इमादुद्दीन अल्-मिस्री जिनका सम्बन्ध अरदन से है ने ख़िलाफ़त अहमदिया के क़ियाम के विषय में भविष्यवाणी पर आधारित आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की एक हदीस और इस का उर्दू अनुवाद पढ़ कर सुनाया। जबकि प्रिय ताहिर रमज़ान मरूंडा (तनज़ानिया) ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का मंज़ूम कलाम "यह रोज़ कर मुबारक सुबहा नम्या यरानी'' ख़ूबसूरत आवाज़ में पढ़ा। नज़्म के बाद हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की किताब फ़तह इस्लाम से एक इक़तिबास प्रिय जरीउल्लाह अन्तून (कज़ाकिस्तान) ने उर्दू भाषा में पेश किया और इस के बाद हज़रत अमीरुल मौमेनीन ने विद्यार्थियों से बात चीत शुरू की और उनके प्रश्नात के उत्तर अता फ़रमाए जो निहायत ईमान में वृद्धि करने बाले और आध्यात्मिक थे।

★ एक प्रश्न यह था कि ख़ुदा तआला के क़ुरब की प्राप्ति का बेहतरीन माध्यम क्या है? इस प्रश्न के उत्तर में हज़रत अमीरुल मौमेनीन ने फ़रमाया कि स्वयं ख़ुदा तआला ने बताया है कि इन्सान को ख़ुदा तआला ने अपनी इबादत के लिए पैदा किया है प्रेम के लिए इबादत का हक़ अदा करो फिर सूरः बकरः के प्रारम्भ में भी ईमान बिल ग़ैब के बाद नमाज़ के क़ियाम करने का वर्णन है और नमाज़ में सबसे ज़्यादा क़ुरब इलाही का स्थान सज्दे में होता है इसलिए यदि सज्दे में दुआएं करोगे तो क़ुरब हासिल होगा और दुआ में दुनिया-दारी मांगने की बजाय ख़ुदा का क़ुरब माँगोगे तो यह बेहतरीन माध्यम ख़ुदा के क़रीब होने का बन सकेगा।

★ एक विद्यार्थी ने दरयाफ़त किया कि कौन कौन से घाना के खाने और फल हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला को अपने घाना में क़ियाम के दौरान पसंद आए थे? हुज़ूर ने फ़रमाया कि फूफू, केंके, प्लांटेन, ग्रांऊड नट, सूप के साथ खाया है उनमें से फूफू ज़्यादा पसंद आया था फिर जो लफ़ राईस बहुत अच्छा घाना का खाना है। घाना के सारे फल ही बहुत अच्छे हैं। ऐसारचरर से मंसल्म जाते हुए एकोटी के अनानास (pineapple) बहुत ही अच्छे हैं और घना के लोगों का संतरे खाने का तरीक़ भी बहुत मज़े-दार है। जिस तरह से वे संतरे को छीलते हैं और हाथ से दबा कर उस का जूस पीते हैं वह बहुत मज़े का तरीक़ है केले की बहुत सी क़िस्में घाना में पाई जाती हैं। एक सुर्ख़-रंग का छोटे साइज़ का केला भी होता है जब हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस रहमहुल्लाह घाना तशरीफ़ लाए थे तो मैं ने यह हुज़ूर को भी पेश किया था तो हुज़ूर ने फ़रमाया कि यह कैसा है। ख़ाकसार ने कहा कि बहुत अच्छा है तो हुज़ूर ने उसे खा कर देखा और बहुत पसंद फ़रमाया।

★ एक विद्यार्थी ने इसतेख़ारे के बारे में प्रश्न किया कि हम कभी कबार कुछ मामलात के बारे में दुआ करते हैं लेकिन कोई स्वप्न नहीं आता तो किस तरह गंभीर विषयों में निर्णय किया जाए उदाहरणतः शादी के लिए कि रिश्ता क़बूल करें या न करें? हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला ने फ़रमाया कि इसतेख़ारा का अर्थ है "ख़ैर तलब करना'' यदि ख़ैर है और दिल को तसल्ली हो जाए तो वह काम कर ले जिसके बारे में इसतेख़ारा किया था। यदि तसल्ली न हो तो न करे। यह इसतेख़ारा है इसतख़बारा नहीं है कि ज़रूर कोई ख़बर मिलेगी। इस में कशफ़ या स्वप्न या इल्हाम का कोई वादा नहीं है ख़ाबों के पीछे नहीं पड़ना चाहिए दिल की तसल्ली ज़रूरी चीज़ है और फिर जब शादी हो जाए तो भी दुआ जारी रखनी चाहिए कि दिल्ली क़ुरबत रहे और औलाद भी नेक हो फिर औलाद की तर्बीयत के लिए भी दुआ करते रहना चाहिए अतः इसतेख़ारा ख़ैर मांगने का नाम है।

★ एक प्रश्न हुआ कि हुज़ूर आप घाना में क़ियाम के समय का कोई दिलचस्प वाक़िया सुना सकते हैं? फ़रमाया : वाक़ियात कुछ सुनाए भी हैं और अब चालीस वर्ष पहले की बात कहाँ याद होगी। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस रहमहुल्लाह का दौरा घाना मेरी वहां मौजूदगी के समय हुआ था तो हुज़ूर के खाने और मेहमान-नवाज़ी का इंतिज़ाम मेरे और मेरी पत्नी के सपुर्द था। हम हुज़ूर के साथ-साथ रहे और उस समय को बहुत आनंद महसूस किया। एक दफ़ा इक़रा में बहुत से लोग हुज़ूर से मिलने के लिए जमा थे। हुज़ूर उनसे मिलने के लिए बाहर तशरीफ़ लाए तो बारिश शुरू हो गई परन्तु हुज़ूर खड़े रहे। छतरी थी लेकिन बारिश बहुत तेज़ थी हुज़ूर की उचकन और कपड़े इत्यादि सब भीग गए लेकिन मुलाक़ात करने वाले अपनी जगह से हिले तक नहीं। हुज़ूर ने इन सब हाज़िरीन के सब्र की बहुत तारीफ़ की और फ़रमाया कि ऐसा ही वाक़िया मेरे साथ भी हुआ जब मैं 2005 ई. में तनज़ानिया गया तो वहां भी बारिश शुरू हो गई और केनोपी पर पानी खड़ा हो गया। बाद में एक झटके से वह सारा पानी केनोपी के अंदर मौजूद महिलों पर गिरा लेकिन कोई भी अपनी जगह से न हिला, कमाल का सब्र था जिसका उन्होंने उदाहरण दिखाया। इसी तरह डिसिप्लिन है इस को भी क़ायम करना चाहिए और अफ़्रीक़ा वाले यह कर भी सकते हैं अतिरिक्त दीन के डिसिप्लिन भी सीखें और जा कर अपनी क़ौम को भी सिखाएँ वैसे आप में यह ख़ूबी अल्लाह तआला की तरफ़ से प्रदान की गई है उसको organise कर लें तो दुनिया का मार्गदर्शन कर सकते हैं और अफ़्रीक़ा ने एक दिन दुनिया का रहनुमा बनना है। इस प्रश्न का उत्तर देते हुए कि अध्यन करने की आदत कैसे डाल सकते हैं? हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला ने फ़रमाया किसी भी काम के लिए पुख़्ता इरादे का होना ज़रूरी है फिर अपना एक टाइम टेबल बनाएँ। इसका तरीक़ यह है कि एक हफ़्ते तक अपनी रूटीन को नोट करें हर काम जो करते हैं उसे नोट करें सुबह से शाम तक और शाम से सुबह तक फिर देखें कि कितना समय ज़ाए किया और कितना समय ज़रूरियात के नाम पर खर्च किया। फिर अगले हफ़्ते का चैक करें कि इन समस्त कामों में अच्छे और ज़रूरी काम कितने थे और बेकार और ग़ैर ज़रूरी काम कौन से थे और उनमें कितना समय ज़ाए हुआ। फिर उस की रोशनी में अपना time table बनाएँ और इस में अध्यन का समय निर्धारित करले तो ज़रूर अध्यन के लिए समय निकल सकता है।

★ एक विद्यार्थी ने कहा कि जामिआ की रूटीन की वजह से नींद पूरी नहीं होती इसलिए हुज़ूर की राय में एक विद्यार्थी के लिए कितनी नींद लेना ज़रूरी है? हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला ने फ़रमाया कि सोने से दुनिया फ़तह नहीं कर सकते आप अरदन से हैं तो अरब दुनिया को फ़तह करने के लिए सोते रहने से काम नहीं बनेगा। फ़रमाया सोने के लिए छः घंटे काफ़ी हैं यदि समय को दरुस्त तरीक़ पर गिना जाए तो समय ज़ाए नहीं होगा। यदि आप प्रतिदिन दो घंटे भी अध्यन की मुस्तक़िल आदत डाल लें तो बहुत बड़े ज्ञानी बन सकते हैं।

उद्देश्य इन रुहानी विषयों के बारे में पूरी वज़ाहत और ख़ुदा से सम्बन्ध क़ायम करने के बारे में ख़ूबसूरत आदेश ने जामिआ के विद्यार्थियों में अमल की बिजली सी भर दी और हुज़ूर के प्रोग्राम के बाद विद्यार्थियों के बुलंद आवाज़ से नारे इस बात के सकेंत थे कि यह मुलाक़ात समस्त विद्यार्थियों और अध्यापकों में एक नई रूह फूँकने का काम कर गई है।

अल्हम्दोलिल्ला अला ज़लिक रिपोर्ट : मिर्ज़ा ख़लील अहमद बेग, वायस प्रिंसिपल जामिआ अहमदिया इंटरनैशनल घाना

(धन्यवाद सहित अख़बार अल् फ़ज़ल इंटरनैशनल 11 दिसंबर 2020)

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अः 17 मई 2019)

तालिबे दुआ

KHALEEL AHMAD

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY, JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2020-2022 Vol. 6 Thursday 28 October 2021 Issue No.43

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 575/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

पृष्ठ 1 का शेष

साथ होते हीं ओर उन में से एक यह भी है कि नफ़सानी कलाम का सिलसिला बिलकुल ख़त्म हो जाता है और यह बात असल कैफ़ीयत के अनिवार्य बातों में से है और इसके चिन्हों तथा निशानों की दलील वे भविष्यवाणियां होती हैं जो ख़ुदा तआला उन्हें प्रदान करता है।

यह भी याद रखो कि नबियों का एक और नाम आसमान पर होता है जिससे दूसरे लोग परिचित भी नहीं होते और कई वक़्त जब वह आसमानी नाम दुनिया में पेश होता है तो लोगों को ठोकर लग जाती है। जैसे मेरे ही मामला में ख़ुदा ने मेरा नाम मसीह इब्न-ए-मरियम भी रखा है। कई अज्ञान एतराज़ करते हैं कि तुम्हारा नाम तो ग़ुलाम अहमद है वे इस भेद को समझ नहीं सकते। यह नबुव्वत के भेदों में से एक भेद है।

अत: जब दोनों किस्म के झूठो वार्तालाप ख़त्म हो जाते हैं,तो फिर दिल बोलता है हर वक़त बोलता रहता है। हरकत करता है। तब भी इससे आवाज़ आती है यही कारण है कि हज़ारों हज़ार लोग उसके पास और और किस्म की बातों में व्यस्त हों,यह अपने इस सिलसिला में लज़्ज़त पाता है और अपने महबूब से कलाम करने में लीन होता है। यही कारण उनके हृदय की दृढ़ता की होती है। कोई शोर उसको परेशान नहीं कर सकता। आम तौर पर एक आशिक़ चाहता है कि वह अपने माशूक़ और महबूब की सुन्दरता पर पूरी सूचना पा ले और हर समय उससे कलाम करे,परन्तु यह सब कुछ नहीं होता है। और यह ख़्वाहिशें अपमानित हैं, परन्तु ख़ुदा तआला के साथ मुहब्बत करने वाला और उसके इश्क़ में गुम हुआ क़ौम नबियों की इन झूटे और फ़ानी आशिक़ों के इशक़ से कहीं बढ़कर अपने अन्दर जोश रखते हैं,क्योंकि वह ख़ुदा वह है जो झुकने वालों की तरफ़ झुकता है। यहां तक कि उससे ज़्यादा ध्यान करता है। ख़ुदा की तरफ़ आने वाला यदि मामूली चाल से चलता है तो अल्लाह तआला उसकी तरफ़ दौड़ कर आता है। अत: ऐसे ख़ुदा की तरफ़ जिसका ध्यान हो जाए और वह उसकी मुहब्बत में खोया जाए,वह मुहब्बत और इलाही इशक़ की आग इन सांसारिक और नफ़सानी विचारों को जला देती है फिर उनके अंदर सिर्फ रूह हो जाती है और वह पवित्र वाणी जो इधर से शुरू होती है,वह ख़ुदा तआला की वाणी होती है , दूसरे रंग में यह भी कह सकते हैं कि यह दुआ करता है और अल्लाह तआला उसको उत्तर देता है। अत: यह एक नबुव्वत का कमाल है। और اَنۡعَمۡتَ عَلَيۡهِمۡ में रखा गया है। इसलिए जब इन्सान اهۡدِنَا الصِّرَاطَ انسان الۡمُسۡتَقِيۡمَ صِرَاطَ الَّذِيۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَيۡهِمۡ (अल-फ़ातहा:6, 7) की दुआ मांगे, तो उसके साथ ही यह बात सम्मुख रहे कि इस नबुव्वत के कमाल को प्राप्त करे।

सिद्दीक़ीत का स्थान

फिर दूसरा कमाल सिद्दीक़ों का कमाल है। सिद्दीक़ अतिशियोक्ति की विभक्ति है अर्थात जो बिलकुल सच्चाई में लीन हो और कमाल दर्जा का सच्चाई का पाबंद और सच्चा आशिक़ हो। उस वक़्त वह सिद्दीक़ कहलाता है। यह एक ऐसा स्थान है कि जब एक व्यक्ति इस दर्जा पर पहुंचता है तो वह हर किस्म की सदाक़तों और सच्चाइयों का सार और उनको खींचने वाला हो जाता है जिस तरह पर आतिशी शीशा सूरज के प्रकाश को अपने ऊपर जमा कर लेता है इसी तरह पर सिद्दीक़ सच्चाई के कमालों का जज़ब करने वाला होता है। जैसा कि किसी व्यक्ति ने कहा है कि

ज़र ज़र कुशद दर जहां गंज गंज

जब एक चीज़ बहुत बड़ा ज़ख़ीरा पैदा कर लेती है तो उसी प्रकार की चीज़ों को जज़ब करने की शक्ति इस में पैदा हो जाती है

सिद्दीक़ीयत कमाल को प्राप्त करने का फ़लसफ़ा

सिद्दीक़ के कमाल को प्राप्त करने का फ़लसफ़ा यह है कि जब वह अपनी कमज़ोरी और असहयता को देखकर अपनी ताक़त और सामर्थ्य के अनुसार اِيَّاكَ نَعۡبُدُ कहता है और सच्चाई धारण करता और झूठ को छोड़ देता है और हर प्रकार की गन्दगी और अपवित्रता से जो झूट के साथ जुड़ी होती है। दूर भागता है और वादा कर लेता है कि कभी झूट न बोलूँगा,न झूटी गवाही दूँगा और नफ़सानी भावनाओं के रंग में कोई झूठी बात न करूँगा। न व्यर्थ रूप से, न ख़ैर के लिए, न बुराई को दूर करने के लिए। अर्थात किसी रंग और हालत में भी झूट को धारण नहीं करूँगा। जब इस हद तक वादा करता है तो मानो اِيَّاكَ نَعۡبُدُ पर वह एक ख़ास अमल करता है। और वह कार्य उच्च दर्जा की इबादत है। اِيَّاكَ نَعۡبُدُ से आगे اِيَّاكَ نَسۡتَعِيۡنُ है। चाहे यह उसके मुँह से निकले या न निकले, परन्तु अल्लाह तआला जो समस्त फैज़ों का स्रोत और सच्चाई और रास्ती का चश्मा है। उस को ज़रूर मदद देगा और सच्चाई के उच्च नियम और हक़ायक़ उस पर खोल देगा। जैसे यह नियम की बात है कि कोई व्यापारी जो अच्छे उसूलों पर चलता है और सच्चाई और दियानतदारी को हाथ से नहीं देता। यद्यपि वह एक पैसा से व्यापार करे अल्लाह तआला उसे एक पैसा के लाखों लाख रुपया देता है।

सिद्दीक़ पर क़ुर्आन के मआरिफ़ खोले जाते हैं

इसी तरह पर जब आम तौर पर इन्सान सच्चाई और रास्तबाज़ी से मुहब्बत करता है। और सच्चाई को अपना शिआर बना लेता है तो वही रास्ती इस महान सिदक़ को खींच लाती है जो ख़ुदा तआला को दिखा देती है। और वह साक्षात सच्चाई क़ुरआन करीम है और वह सिदक़ आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हस्ती है। ऐसा ही ख़ुदा तआला के मामूर तथा मुर्सल सच और सच्चाई होते हैं। अत: वे इस सिदक़ तक पहुंच जाते हैं,तब उसकी आँख खुलती है और एक ख़ास बसीरत मिलती है। जिससे क़ुरआन के मआरिफ़ खुलने लगते हैं। मैं इस बात के मानने के लिए कभी तैयार नहीं हूँ कि वह व्यक्ति जो सिदक़ से मुहब्बत नहीं रखता और रास्तबाज़ी को अपना शआर नहीं बनाता वह क़ुरआन करीम के मआरिफ़ को समझ भी सके। इस लिए कि उसके दिल को तुलना ही नहीं,यह तो सिदक़ का चश्मा है उसे वही पी सकता है जिसको सिदक़ से मुहब्बत हो।

और फिर यह भी याद रखना चाहिए कि कुर्आन के मआरिफ़ केवल इसी बात का नाम नहीं कि कभी किसी ने कोई नई बात वर्णन कर दी। इस की तो वही मिसाल है।

गाह बाशद कि कूद के नादान
ब-ग़लत बर हदफ़ ज़ंद तेरे

उन्हें कुरआन के हक़ायक़ तथा मआरिफ़ के वर्णन करने के लिए दिल को मुनासबत और कशिश और सच्चाई सम्बन्ध और सिदक़ से हो जाता है और फिर यहां तक इस में तरक़्क़ी और कमाल होता है कि مَا يَنۡطِقُ عَنِ الۡهَوٰى (अन्नजम:4) का मिस्दाक़ हो जाता है। इस की निगाह जब पड़ती है ,सिदक़ पर ही पड़ती है। इस को एक ख़ास क़ुव्वत और इमतियाज़ी ताक़त दी जाती है जिससे वह हक़ तथा झूठ में शीघ्र ही अन्तर कर लेता है। यहां तक कि इसके दिल में एक क़ुव्वत आ जाती है। जो ऐसी तेज़ हिस होती है कि उसे दूर से ही झूठ की बू आ जाती है। यही वह भेद है जो لَا يَمَسُّهٗۤ اِلَّا الۡمُطَهَّرُوۡنَ (अलवाकिया:80) में रखा गया है

झूट छोड़े बग़ैर इन्सान पवित्र नहीं हो सकता

हक़ीक़त में जब तक इन्सान झूठ को तर्क नहीं करता,वो मुतह्हर नहीं हो सकता। नाबकार दुनियादार कहते हैं कि झूट के बग़ैर गुज़ारा नहीं होता। यह एक बेहूदागोई है। यदि सच्च से गुज़ारा नहीं हो सकता,तो झूट से हरगिज़ नहीं हो सकता। अफ़सोस है कि यह हत भागे ख़ुदा की क़दर नहीं करते। वे नहीं जानते कि ख़ुदा तआला के फ़ज़ल के बिना गुज़ारा नहीं हो सकता। वह अपना माबूद और मुश्किल दूर करने वाला झूट की गन्दगी को समझते हैं। इसी लिए ख़ुदा तआला ने झूट को बुतों की गन्दगी के साथ वाबस्ता करके क़ुरआन करीम में वर्णन किया है। निसन्देह समझो कि हम एक क़दम क्या एक सांस भी ख़ुदा के फ़ज़ल के बिना नहीं ले सकते। हमारे जिस्म में क्या-क्या शक्तियां हैं,परन्तु हम अपनी ताक़त से क्या कर सकते हैं? कुछ भी नहीं

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 311 से 313 प्रकाशन 2008 क़ादियान)

☆ ☆ ☆ ☆
☆ ☆ ☆

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad